संजय की कलम से ..

झाँकियों के साथ निज जीवन में भी झाँकिए

जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण के भक्त, उसकी झाँकियाँ तैयार करते और रथ पर उन्हें नगर में घुमाते हैं। परंतु वे यह नहीं सोचते कि श्री कृष्ण का जीवन झाँकियों के योग्य बना किस आधार पर? वे श्री कृष्ण की झाँकी देखकर फिर अपने जीवन में नहीं झाँकते, यह नहीं देखते कि हमारे जीवन में अभी तक कितनी महानता आई है? वे श्री कृष्ण को 'सुन्दर' कहते हैं परंतु यह नहीं देखते कि हमारी आत्मा कितनी सुन्दर हुई है? वे श्री कृष्ण को 16 कला संपूर्ण मानते हैं परंतु इस बात का चिन्तन नहीं करते कि हमारा अपना जीवन चढ़ती कला की ओर जा रहा है या उतरती कला की ओर? कृष्ण के नाम के साथ तो वे 'श्री' की उपाधि का प्रयोग करते हैं परंतु हमारे अपने जीवन में कहाँ तक श्रेष्ठता आ पाई है – इसका विचार वे नहीं करते। श्री कृष्ण की झाँकियाँ तो लोग हर वर्ष निकालते हैं और कितने जन्मों से निकालते आये हैं परंतु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने दामन की ओर भी झांक कर देखें कि उसमें कितने दाग हैं, फिर ईश्वरीय ज्ञान और योग द्वारा अपने जीवन को भी 'झाँकियों के योग्य' अर्थात् 'सुन्दर' बनायें।

क्या आपके मोह नष्ट हुए?

कोई कह सकता है कि हम प्रतिदिन गीता तो पढ़ते ही हैं और भगवान की याद में बैठने का यत्न भी करते हैं। सत्य है, गीता के 18 अध्याय तो आपने न जाने कितनी बार पढ़ लिये होंगे परंतु प्रश्न यह है कि क्या उनको पढ़ने के बाद आप नष्टोमोहा और स्मृतिलब्धा भी हुए? आपके अपने जीवन को बदलने का पहला अध्याय भी विधिपूर्वक शुरू हुआ? क्या आपने भगवान के स्वरूप को समझा और उसकी 'मन्मनाभव' रूप आज्ञा पर चलना आरंभ किया? **आप श्री कृष्ण को तो 'मोहन-मोहन' कहकर पुकारते हैं परंतु श्री कृष्ण तो मोह न होने के कारण ही 'मोहन' (मोह+न) थे, तब क्या आप भी 'मोहन' बन रहे हैं? श्री कृष्ण तो दिव्य गुणों के कारण मोहिनीमूर्त थे, तब क्या आप भी दिव्य गुण धारण कर रहे हैं?**

आप अपना नये जन्म का दिन कब मनायेंगे?

श्री कृष्ण का जन्मदिन तो आपने बहुत बार मनाया है और आप मनायेंगे भी परंतु आप अपना नये जन्म का दिन कब मनायेंगे? आप सोचते होंगे कि हमारा नया जन्म तो तब होगा जब शरीरान्त होने के बाद

(शेष..पृष्ठ 28 पर)

अमृत-सूची

- रक्षाबंधन का वास्तविक अर्थ *(सम्पादकीय)* 4
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 7
- 'पत्र' संपादक के नाम 9
- दादी जी के साथ बिताये हुए..10
- रक्षाबंधन *(कविता)* 12
- पुरुषोत्तम संगमयुग और.......13
- दृष्टि का कमाल..............15
- दुआयें दो, दुआयें लो.........16
- दिल को मिला सुकून.........17
- लाभ, लोभ का जनक 18
- रेकी और राजयोग............19
- ये कृतियाँ *(कविता)*..........20
- मनसा सेवा – एक शौक......21
- ग्लोबल अस्पताल..............23
- मृग-मरीचिका के बीच जल..24
- विकास और आध्यात्मिकता.25
- मेरा बाबा *(कविता)* 27
- दादी माँ की ममता............28
- मन के जीते जीत..............29
- सचित्र सेवा समाचार......... 30
- निश्चिन्त जीवन 32
- सचित्र सेवा समाचार......... 34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383

रक्षाबंधन का वास्तविक अर्थ

हम हर वर्ष रक्षाबंधन का पावन पर्व मनाते हैं। वर्तमान समय इस पर्व का जो साधारण-सा उद्देश्य रह गया है, उसे देखकर कई प्रश्न उत्पन्न होते हैं। एक तो यह कि क्या बहन राखी नहीं बाँधेगी तो भाई रक्षा नहीं करेगा क्या? सनातनी संस्कृति को छोड़कर बाकी किसी भी संस्कृति (बौद्धी, क्रिश्चियन, मुस्लिम आदि) में राखी नहीं बाँधी जाती परंतु भाइयों द्वारा अपनी लौकिक बहनों की रक्षा तो वहाँ भी होती है।

कर्त्तव्य बोध के लिए कोई और त्योहार क्यों नहीं?

यदि कोई कहे, यह त्योहार भाई-बहन के बीच स्नेह बढ़ने का प्रतीक है तो भी प्रश्न उठता है कि यदि राखी ना बाँधी जाए तो बहन-भाई का प्रेम समाप्त हो जायेगा क्या? भाई-बहन को हिन्दी में सहोदर-सहोदरी भी कहा जाता है जिसका संधिविच्छेद करें तो अर्थ निकलता है, एक ही उदर (पेट) से जन्म लेने वाले; जो एक उदर से जन्म लें, एक ही गोद में पलें, उनमें आपस में स्नेह ना हो, यह कैसे हो सकता है? सफर के दौरान कोई यात्री हमारे साथ एक ही वाहन में होता है, उसे सहयात्री कहते हैं। दो-चार घंटे एक ही गाड़ी में सफर करने वाले से भी इतना स्नेह हो जाता है कि हम उसका पता ले लेते हैं, पुन: मिलने का वायदा भी कर लेते हैं तो क्या सहोदर-सहोदरी में स्वाभाविक स्नेह नहीं होगा जो उन्हें प्रेम जागृत करने के लिए राखी का सहारा लेना पड़े।

फिर यह भी प्रश्न उठता है कि रिश्ते तो और भी हैं, क्या उनमें भी कर्त्तव्य बोध जागृत करने के लिए कोई त्योहार मनाया जाता है? क्या पिता अपने बच्चों की पालना करे, इसके लिए कोई त्योहार है, माँ अपने बच्चों को खुशी-शान्ति दे, इसके लिए कोई त्योहार है? फिर भाई, बहन की रक्षा करे, इसके लिए त्योहार क्यों?

निष्पाप नज़रों से देखो

वास्तव में इस त्योहार का रूप, इसके प्रारंभ में एक बहुत ही ऊँची और बेहद की भावना लिए हुए था जो समय के अंतराल में धूमिल हो हद में बदल गई। भारतीय संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम् में विश्वास करती है। वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् सारा विश्व ही परिवार है। भाई-बहन का नाता ऐसा नाता है जो कहीं भी, कभी भी बनाया जा सकता है। आप किसी भी नारी को बहन रूप से नि:संकोच संबोधित कर सकते हैं। बहुत छोटी आयु वाली को, हो सकता है, माता ना कह सकें पर बहन तो कह ही सकते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् हमें यही सिखाता है कि संसार की हर नारी को बहन मानकर निष्पाप नज़रों से देखो और हर नर को भाई मानकर निष्पाप नज़रों से देखो।

सगी बहन है सब नारियों की प्रतिनिधि

इस निष्पाप वैश्विक संबंध की याद दिलाने यह त्योहार आता है और इसके लिए निमित्त बनती है सगी बहन क्योंकि बहन-भाई के नाते में लौकिक बहन का नाता स्वाभाविक रूप से पवित्रता लिए रहता है। बहन जब अपने लौकिक भाई की कलाई पर राखी बाँधती है तो यही संकल्प देती है कि भाई, जैसे तुम अपनी इस बहन को पवित्रता की नज़र से देखते हो, दुनिया की सभी नारियों को, कन्याओं को ऐसी ही नज़र से निहारना। **संसार की सारी नारियाँ तुझे राखी नहीं बाँध सकतीं पर मैं उन सबकी तरफ से बाँध रही हूँ। वो सब मुझमें समाई हुई हैं, उन सबका प्रतिनिधि बनकर मैं आपसे निवेदन करती हूँ, आपको**

प्रतिज्ञाबद्ध करती हूँ कि आप निष्पाप बनें। मेरी सुरक्षा भी तभी होगी जब आप औरों की बहनों की सुरक्षा करेंगे। यदि आपके किसी कर्म से संसार की कोई भी बहन असुरक्षित हो गई तो आपकी यह बहन भी किसी के नीच कर्म से असुरक्षित हो सकती है। आपसे कोई अन्य बहन न डरे और अन्य किसी भाई से आपकी इस बहन को कोई डर न हो – यही राखी का मर्म है।

कोई भी पर्व अनादि नहीं है

कोई भी पर्व अनादि नहीं है, न ही आदिकालीन है। सभी पर्व मध्यकाल अर्थात् द्वापरयुग से प्रारंभ हुए हैं। आदिकाल में तो नारी इतनी सशक्त थी कि उसे किसी से रक्षा की ज़रूरत ही नहीं थी। नारायण से भी पहले जिनका नाम आता है, उन श्रीलक्ष्मी को बिना पर्दे के, भरे दैवी दरबार में देव-पुरुषों के बीच नारायण के संग बैठे दिखाया जाता है क्योंकि वहाँ कुदृष्टि-वृत्ति का कोई भय ही नहीं था।

द्वापरयुग में भी प्रारंभ में नारी सुरक्षित थी। फाह्यान, ह्वेनसांग आदि विदेशी यात्रियों के वर्णनों से स्पष्ट पता चलता है कि उस समय के भारत में कोई नारी अकेली, आधी रात को भी ज़ेवर पहने, जंगल से भी गुज़रे तो भी बाल-बांका नहीं होता था। घरों में ताले नहीं लगते थे, तामसिक खान-पान नहीं था, राजा-प्रजा का पिता-पुत्र जैसा नाता था। पर विदेशी आक्रमण के समय (द्वापर का अंत और कलि का आरंभ) से मूल्यों में गिरावट आई, जो कलियुग के अंत तक पूर्ण पतन में बदल गई।

जन्म देने से बड़ा हो गया संहार करना

जब विधर्मी और विदेशियों के साथ युद्ध करने पड़े तो युद्धों में पुरुषों के शारीरिक बल का बोलबाला हो जाने के कारण उनकी भूमिका ऊँची मानी जाने लगी और कोमलांगी नारी दूसरे दर्जे की बना दी गई। नारी जन्म देती है और युद्ध में सहार होता है। कैसी विडंबना है कि जन्म देने वाली की भेंट में युद्ध में संहार करने वालों की महिमा होने लगी। जन्म देने से बड़ा कार्य हो गया संहार करना। कमज़ोर नारी ने ईश्वर को पुकारा पर वह समय भगवान के सृष्टि पर अवतरित होने का नहीं था इसलिए ऐसे सहारे को, ऐसे संबंध को सामने लाया गया जो नज़दीक हो, आयु में भी समकक्ष हो और नारी की इज्जत पर भी हाथ ना डाले। यूं तो पिता का नाता भी पवित्र है, पुत्र का नाता भी पवित्र है पर पिता पिछली पीढ़ी का और पुत्र अगली पीढ़ी का प्रतीक है। बूढ़े और बच्चे से रक्षा करवाई नहीं जाती, की जाती है इसलिए समकक्ष पीढ़ी वाले भाई को ही इस ज़िम्मेवारी के अनुकूल माना गया।

शास्त्र कहता है, बचपन में पिता, जवानी में पति और बुढ़ापे में पुत्र, नारी की रक्षा करे। परंतु ये हद के रिश्ते हैं और हद के जीवन के भरण-पोषण की बात इनके द्वारा कही गई है। बेहद के दृष्टिकोण से देखें तो हम हर किसी को पिता, पति, पुत्र नहीं बना सकते पर हर एक आत्मिक नाते से भाई-भाई हैं और दैहिक नाते से बहन-भाई हैं इसलिए राखी का संबंध, रक्षा का संबंध भाई से जोड़ दिया गया।

असुरक्षित समाज में जी रहे हैं हम

वर्तमान समय सुरक्षा के नाम पर रक्षा मंत्रालय बना हुआ है पर उसके प्रभारी रक्षामंत्री की रक्षा की भी कोई गारंटी थोड़े ही है। सुरक्षा के नाम पर पुलिस और सेना पर देश के बजट का एक बड़ा भाग व्यय होने पर भी देश के अन्दर या सीमा पर पूर्ण सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। हम एक ऐसे असुरक्षित समाज में जी रहे हैं जहाँ काल आकर कभी भी किसी को दबोच सकता है। ऐसे में हमारे धन, धर्म, देह और सम्मान की रक्षा की ज़िम्मेवारी कौन ले सकता है?

ब्राह्मणों और बहनों का स्वार्थ

प्राचीनकाल में ब्राह्मण लोग

यजमानों और राजाओं को राखी बाँधते थे। उस समय के ब्राह्मण पवित्र रहते थे, वे अनासक्त थे। राखी के बदले राजा से स्थूल प्राप्ति की कामना नहीं रखते थे। राजा बलि की कहानी में प्रसंग है कि जब वामन रूपधारी भगवान ने केवल तीन पैर पृथ्वी दान में माँगी तो राजा बलि ने कहा, ब्राह्मण, यह तुम क्या माँग रहे हो, मैं राजा हूँ, कम से कम मेरी हैसियत के अनुसार तो माँग। तब वामन रूपधारी भगवान ने कहा, ब्राह्मण को उतना ही लेना चाहिए, जितनी उसको आवश्यकता है, नहीं तो ब्राह्मणत्व कलंकित हो जाता है। परंतु धीरे-धीरे ब्राह्मण भी गृहस्थी बनते चले गए। बहुतों ने तो ब्राह्मण-कर्म छोड़ ही दिया, जो थोड़ा बहुत बचा है, उसमें भी परहित के स्थान पर स्वहित अर्थात् स्वार्थ आ गया है। अब राखी के बदले यजमान को बुराइयों से बचाने के बजाय मनमाँगा धन पाना ही उद्देश्य रह गया है।

वर्तमान समय बहनों ने भी, राखी के बदले भाइयों से धन-प्राप्ति का लक्ष्य बना लिया है। अब वे भी इस बात के लिए चिन्तित नज़र नहीं आती कि उनके भाई की दृष्टि-वृत्ति कैसी है बल्कि इस बात में ज्यादा रुचि लेने लगी हैं कि राखी के बदले उन्हें कितना धन मिलने वाला है।

प्रतिज्ञा का प्रतीक है रक्षासूत्र

जब ब्राह्मण और बहनें, दोनों ही अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाते हैं और मूल्यों में ऐसी गिरावट आ जाती है तो इस गिरे हुए समाज को पुनः सिरताज और ऊँच बनाने के लिए स्वयं भगवान को अवतरित होना पड़ता है और वे मानव मात्र (चाहे स्त्री चाहे पुरुष) को मर्यादा तथा पवित्रता की पालना करने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध करते हैं। यह रक्षा-सूत्र उसी प्रतिज्ञा का प्रतीक है। **जैसे यादगार शास्त्र रामायण में सीता के सामने लकीर खींची गई थी कि इससे बाहर पाँव मत निकालना, नहीं तो रावण ले जायेगा, यह रक्षा-सूत्र भी इसी प्रकार एक प्रतीक है कि इससे जुड़ी पवित्रता की प्रतिज्ञा को मत तोड़ना, नहीं तो कोई भी रक्षा नहीं करेगा। मानव की रक्षक उसकी मर्यादा है। कहा गया है, तुम मर्यादा की रक्षा करो, मर्यादा तुम्हारी रक्षा करेगी।**

भगवान को कहा जाता है कि वे करनहार भी हैं और करावनहार भी। वे राखी बाँधने के लिए ऐसी आत्माओं को निमित्त बनाते हैं जो बहन और ब्राह्मण दोनों का कर्त्तव्य निभाती हैं, जो पवित्र कन्यायें भी हैं और उच्च महान धारणाओं में सच्चे ब्राह्मण समान भी हैं। जो निर्विकारी भी हैं और अनासक्त भी। ऐसी बहनें हैं ब्रह्माकुमारी बहनें जो भगवान का प्रतिनिधि बनकर, जन-जन को राखी बाँध उनसे विकारों और बुराइयों का दान लेती हैं।

तिलक और मिठाई

इस दिन राखी के साथ-साथ मस्तक पर तिलक लगाने की भी प्रथा है। यह तिलक विजय का प्रतीक है। जब हम आत्म-स्वरूप में टिककर दूसरे को भी आत्मा की नज़र से देखते हैं तो बुराइयों पर हमारी विजय निश्चित है। मीठी वाणी का प्रतीक है मिठाई। मीठी वस्तु खाने के दो-चार मिनट बाद मुख पुनः फीका हो जाता है पर मीठा बोल लंबे समय तक हमारे मन को मीठा रखता है।

इस प्रकार रक्षाबंधन के वास्तविक रहस्य को जानकर इसे मनायेंगे तो यह सच्चे अर्थों में विषतोड़क पर्व सिद्ध होगा।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

मृत्यु से वही छुड़ा सकता है जो मृत्यु से भी बलवान मृत्युंजय हो। काल से बचा वही सकता है जो कालों का भी काल हो। कर्मों के दण्ड और बंधन से मुक्त वही कर सकता है जो कर्मों की गहन गति को जानता हो। मनुष्य से देवता वही बना सकता है जो देवों का भी देव हो। ऐसा तो एक परमपिता परमात्मा शिव ही है।

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

प्रश्नः- मीठे-प्यारे बाबा का प्यार कब मिलता है?

उत्तरः- हमारा चेहरा बताता है, मुझे खिलाने वाला कौन है? चेहरा बताता है, मेरी कमाई कितनी अच्छी है? अन्दर जो जमा है वो चेहरे पर आता है। दुआयें इतनी जमा हैं, तो दुआयें काम कर रही हैं, ऐसी फीलिंग है? बाबा, प्यार भी तब देता है जब शक्ति खींचने का अक्ल है। अक्ल भी उसको आता है जो नकल करना जानता है। विदेश में कानून बहुत सख्त होते हैं, कॉपीराइट के बिगर तो कुछ नहीं कर सकते हैं, आज्ञा लेनी पड़ती है। यहाँ बाबा ने कहा कॉपी (नकल) करना राइट (हक) है, इतना बाबा रहमदिल है, फ्राख दिल है हमारे लिए। भले कॉपी करो पर अभी करो, एकदम जो चाहिए सो करो, मैं साथ देता हूँ सिर्फ सुस्ती बहाना मत बनाना। बाबा कहते, ऐसों को मैं साथ नहीं देता हूँ। कारण बताना माना बहाना करना।

प्रश्नः- अष्ट रत्नों की निशानियाँ क्या होंगी?

उत्तरः- वो नम्बरवार पुरुषार्थ नहीं करेंगे। वैजयन्ती माला में आने वाले नम्बरवार पुरुषार्थ करते हैं। बाबा ने मुरलियों में बताया है, अष्ट रत्न कौन बनते हैं, 108 में आना है तो क्या करें और 16,108 में आना है तो क्या पुरुषार्थ करें? मेरा जो टीचर है उसकी इच्छा है कि इतनी अच्छी तरह शिक्षाओं को जीवन में लायें, जो उसके महावाक्य सत्य हो जाएं। भगवानुवाच, तुम अष्ट रत्न में आने वाली हो, इस निश्चय ने स्वत: अष्ट शक्तियाँ जीवन में दे दी हैं। अगर एक भी शक्ति थोड़ी कम है तो मजा नहीं, अच्छा नहीं लगता है। एक भी शक्ति कम होगी तो आठों ही शक्ति काम नहीं करती हैं। समय पर ज़रूरत है एक की, आवे दूसरी तो फालतू समय गया, फिर मेरा काम तो पूरा हुआ ही नहीं। कोई घड़ी सहनशक्ति चाहिए .. उस समय समाने की शक्ति आये तो फायदा तो हुआ नहीं। कोई विस्तार की बात ही नहीं है, जो समेटने की शक्ति चाहिए। हंस समान परख लिया कि यह काम की बात है, यह नहीं है। परमात्मा ने इतनी अच्छी ऊंची समझ दे करके इतना सच्चा बनाया है तो निर्णय शक्ति आदि सभी शक्तियाँ अपने आप काम करने लग जाती हैं।

जब से बाबा के बनते हैं, तो फौरन राइट (ठीक) क्या है, रांग (ग़लत) क्या है, पाप क्या है, पुण्य क्या है, यह पता चल गया। फिर भी कोई आत्मा ने कहा, यह ऐसे नहीं होना चाहिए, ऐसे नहीं होना चाहिए.. तो बाबा ने कहा, तुम वकालत का काम करना जानते हो क्या? क्या होगा, कैसे होगा, इसी चिन्तन में लम्बा टाइम जाता है। तो यह समय बर्बाद करते हैं। कभी कोई भूल हो जाये तो फिर कहेंगे, हाँ, इसने बरोबर भूल की है। तो न वकील बनना है, न गुनहगार बनना है। गुनाह करना माना भूल करना इसलिए

भगवान के घर में कभी छोटी-सी भूल भी न हो, अटेन्शन नहीं है, तो टेन्शन में रहने से भूलें हो जाती हैं इसलिए थोड़ा अच्छी तरह से, गहराई से ध्यान देके बाबा को याद करो। अष्ट रत्नों में आना हो, तो यह पुरुषार्थ अभी से शुरू कर दो। सिर्फ भगवान का बनने में सुख इलाही का आनंद लेते रहो, आज्ञाकारी होकर रहो, तब लगेगा शिवभगवानुवाच है, हम भी आ सकते हैं।

बाप की आज्ञा है, शिक्षक की शिक्षायें हैं, सखे के रूप में तो एकदम साथ देता है, उनको देख करके करना सरल है। बाकी टीचर, टीचर है, उनके साथ हैण्ड शेक (हाथ मिलाना) थोड़ेही कर सकते हैं इसलिए बाबा को दोस्त बनाने से हाथ में हाथ मिलाना सहज हो जाता है तब उसका साथ है। बाबा विशाल बुद्धि बनाना चाहता है, विशाल माना बड़ा समझदार। बाबा ने जो बुद्धि दी है वो अच्छी तरह से काम करे, इसके लिए योग अच्छा चाहिए। 'मेरी बुद्धि' यह भाव है तो थोड़ा देह का अभिमान है या सम्बन्ध का कुछ सूक्ष्म भान होगा। अभी बाबा हमारी बुद्धि के पीछे पड़ा है, उसे ठीक करके रहेगा, उसके लिए पहला मन्त्र देता है 'मनमनाभव'। जितना अपने ऊपर अटेन्शन रहता, उतना बाबा खुश होता है।

समय का कदर है माना हर बात का फायदा लेने में बच्चा होशियार है क्योंकि संगम का समय थोड़ा है और प्राप्ति बहुत है, जितनी प्राप्ति करना चाहो, बाबा का सारा खज़ाना ले लेवे, तो बाबा खुश हो जायेगा। इसमें मैं बहुत लोभी हूँ कि जो बाबा के पास है वो सब ले लूँ, छिप-छिपके ले लूँ, ऐसा दिल करता है, हक से ले लूँ। बाबा देने के लिए सारा दिन बैठा है और बाबा दे रहा है। बाबा ने क्यों कहा कि अमृतवेले और शाम को संगठन में योग में बैठो। यह जो आदेश मिलते हैं उन पर नहीं चलते हैं तो 8 में तो क्या 108 में भी आना सम्भव नहीं है।

जैसे बाबा ऊपर रहते हुए सभी सेवाएँ कर रहे हैं, ऐसे बाबा कहते, तुम भी रहो ऊपर, शान्तिधाम से आये थे, चक्र में पार्ट पूरा हुआ। शान्तिधाम में जाने के पहले ही ऊपर रहो, नीचे सिर्फ सेवा के अर्थ आओ, तब औरों को महसूसता आयेगी। जैसे ब्रह्माबाबा सदा ऊपर रहते थे, साकार में सब कुछ करते, चक्कर लगाते, खाना खाते ऊपर रहते थे। बच्चे भी जब ऐसे समझदार, गुणवान बनते हैं तब दिलतख्त पर बैठते हैं। तब बाबा गले का हार बना देता है। फिर तो अष्ट रत्न में आने वाले ऐसे बच्चों की आँख में बाबा और बाबा की आँख में ऐसे बच्चे। बाबा की वाणी बड़ी मीठी लगती है, दृष्टि तो एकदम पार कर देती है। ऐसी दृष्टि सदा ही पड़ती रहे तो कितनी अच्छी बात है।

प्रश्नः- पुरुषार्थ में सफलता का आधार क्या है?

उत्तरः- देही-अभिमानी स्थिति में नेचुरल रहा जाए, यह नेचर बन जाए। मैंने देखा है, इसमें दिल से पुरुषार्थ करने वाले को सफलता मिलती है। दिल से करे और लगातार भी करे। कब-कब शब्द होने से, लगातार न होने से मेहनत करनी पड़ती है। फिर आत्मविश्वास थोड़ा कम हो जाता है। अपने अनुभव से, चाहे औरों के अनुभव से, अपनी स्थिति को मजबूत बनाना है। कभी हमारा आत्मविश्वास कम न हो। ब्राह्मण जीवन में विश्वास ने ही यहाँ तक लाके बिठाया है। सेवा में भी बाबा को विश्वास हो गया है कि मेरे बच्चे करेंगे। अगर हमको अपने पर विश्वास है तो बाबा को भी हमारे में विश्वास हो गया है, तब तो कहते हैं कि बच्चे करेंगे। बाबा तो करनकरावनहार है, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर से भी कराने वाला है। करनकरावनहार का पार्ट एक का ही है। ❖

‘पत्र’ संपादक के नाम

ज्ञानामृत के फरवरी अंक में ‘सद्‌गुण देते संतोष’ संपादकीय बहुत अच्छा लगा। संतोष का मतलब है मेहनत से कर्म करने पर जो फल मिलता है, उससे संतुष्ट रहना। सद्‌गुणों एवं सकारात्मक सोच से ही हमें संतोष मिलता है। इसके विपरीत, दुर्गुणों के आधार पर अगर व्यक्ति धन-दौलत कमा भी लेता है तो भी आत्मा को सच्चा सुख, सच्ची शांति नहीं मिलती। अत: मानव की महानता और संतुष्टता का आधार उसके सद्‌गुण हैं जैसेकि त्याग, दया, परोपकार, पवित्रता, क्षमा, व्यवहार कुशलता आदि। अत: मानव को परमात्मा का स्मरण हर समय करना चाहिये, ऐसा करने से सद्‌गुण एवं संतोष बढ़ेगा।

– झूमर लाल राठी, जोधपुर

मैं ज्ञानामृत पत्रिका का नियमित पठन-पाठन करीब एक वर्ष से कर रहा हूँ। मेरी सोच एवं स्वभाव में काफी परिवर्तन हुआ है जिसके लिए मैं पत्रिका तथा केन्द्र के भाई-बहनों का आभारी हूँ। दिसंबर 2010 अंक में प्रकाशित ‘संपूर्ण सुखी बनने की विधि’, ‘इच्छाओं को आवश्यकता न बनायें’ काफी ज्ञानवर्धक और चिंतनपूर्ण स्पष्ट विवेचना है। मुझे दोनों लेखों से काफी शांति मिली जो भविष्य निर्माण में मार्गदर्शन का काम करेगी। संपादन से जुड़े सभी भाई-बहनों एवं लेखकवृंद को हार्दिक आभार!

– डॉ.कामेन्द्र सिंह, पलामू

ज्ञानामृत के सभी छोटे-बड़े लेख ज्ञानवर्द्धक और मन को हलका कर देने वाले हैं। फरवरी 2011 अंक में संपादकीय लेख ‘सद्‌गुण देते संतोष’ में लेखक ने सरल शब्दों में ज्ञानवर्धक प्रेरणा दी है। अवगुणों से हमें असंतोष मिलता है। ये बनाने वाले नहीं, बिगाड़ने वाले हैं। शिव परमात्मा गुणों के भंडार हैं, उनकी याद में रहने से भी सद्‌गुण बढ़ जाते हैं। संपादक भाई, संपादकीय शैली के लिए बधाई के पात्र हैं। ज्ञानामृत पत्रिका इसी तरह कृतार्थ करती रहे, इन्हीं शुभकानाओं के साथ

– दिनेश बंकट, वृंदावन

ज्ञानामृत के अप्रैल 2011 अंक में ‘अकेले का बल’ लेख पढ़ा। बहुत ही अच्छा लगा। हर इंसान अकेले ही आता है और अकेले ही जाता है। कर्मभूमि में ‘मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ’ का ध्येय रखकर चले तो अकेला ही बहुत कुछ कर सकता है। लेखिका बहन इस लेख द्वारा बहुत कुछ कह जाती हैं। फरवरी अंक में ‘समायोजन की शक्ति’ और मार्च अंक में ‘माता के साथ गुरु भी बनिये’ लेख पढ़ा। उनमें से कुछ न कुछ अच्छा सीखने को अवश्य मिला है। ज्ञानामृत मासिक पत्रिका से हमारे जीवन में अनेक अच्छे सद्‌गुण आ जाते हैं। हम उनके द्वारा अच्छा इंसान अवश्य बन सकते हैं। परमपिता परमात्मा शिवबाबा की हम संतान हैं और मनमनाभव हमारा मंत्र बना रहे।

– संतोष कुमार, बगसरा

ज्ञानामृत पत्रिका कलियुग में अमृत है। पहले पहल मैं इस पत्रिका को ध्यान से नहीं पढ़ता था। मोटा-मोटा शीर्षक देख लेता था और अलमारी में रख देता था। अब इसको पूरा पढ़ता हूँ और जीवन में आई मुश्किलों का हल निकालता हूँ। फरवरी 2011 के अंक में ‘समायोजन की शक्ति’ लेख बहुत सुंदर था क्योंकि मैं 66 वर्ष की आयु में भी 30 साल वाले कर्म करना चाहता था मगर अब समझ आई कि मैं सीनियर सीटिजन हूँ तो सीनियर ही काम करने चाहिएँ। शिवबाबा का आशीर्वाद लेकर अच्छे काम करेंगे।

– शाम लाल गुप्ता, धूरी

दादी जी के साथ बिताये हुए अविस्मरणीय पल

● ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश, आबू पर्वत

संसार में एक से एक महान हस्तियाँ हुई हैं जिन्होंने अपनी खूबियों और विशेषताओं के आधार पर दुनिया को प्रभावित किया तथा समाज में नई चेतना जाग्रत की लेकिन दादी प्रकाशमणि जी का व्यक्तित्व और कृतित्व एकदम निराला और भिन्न था। वे एक ओर सादगी की देवी थीं तो दूसरी ओर रॉयल भी थीं। एक-एक गुण जैसेकि उनके अंदर कूट-कूट कर भरा हुआ था। उनके जीवन में माँ की ममता भी थी तो एक तपस्वी की तपस्या भी। चुम्बकीय व्यक्तित्व की धनी दादी जी से एक बार कोई मिल लेता तो जैसेकि सारी ज़िंदगी उनका ही होकर रह जाता।

दादी प्रकाशमणि जी की दिव्यता का प्रकाश आज चारों ओर फैल रहा है। उन्होंने न केवल भारत अपितु समस्त विश्व को आलोकित किया। अन्त समय में दादी जी की देह साथ नहीं दे रही थी लेकिन उनके चेहरे की मुस्कान कम नहीं थी। कई बार तो डॉक्टर भी यह पूछते थे कि रोगी कौन है? दादी जी के जीवन में मैंने स्नेह और शक्ति का सुंदर संतुलन देखा। वे प्यार से शिक्षा देती, किसी की कोई बात सुनकर भी उसके प्रति अपना दृष्टिकोण नहीं बदलती थीं। उनके अन्दर सबको साथ लेकर चलने की कला थी। उमंग और उत्साह तो जैसेकि दादी जी के रोम-रोम में भरा हुआ था।

मुझे दादी जी के साथ लगभग 30 वर्षों तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने उनके जीवन के हर पहलू को बड़ी बारीकी से देखा और पाया कि वे हरफनमौला थीं। उनको हर कार्य में दक्षता प्राप्त थी। वे सदैव तरोताजा रहती थीं और दूसरों को भी ऐसा ही बनने के लिए अभिप्रेरित करती थीं। दादी जी के अनुभवों और उनके जीवन के प्रेरक प्रसंगों को **ज्ञानामृत पत्रिका** के सुधी पाठकों तक पहुँचाने के लिए, लेख लिखने के संदर्भ में मैंने दादी माँ का कम-से-कम पाँच बार साक्षात्कार (इण्टरव्यू) लिया, प्रश्नों के उत्तर देते समय दादी जी गहन मनन-चिंतन में मग्न दिखाई देती थीं।

दादी जी भविष्यद्रष्टा थीं। मुरली सुनाते-सुनाते वे कई बार कहती थीं कि आज बाबा ने मुझे यह प्रेरणा दी, यह टचिंग कराई। इससे सिद्ध होता है कि दादी जी का बाबा के साथ बहुत ही गहरा संबंध था। आपके जीवन का एक-एक प्रसंग इतिहास बनकर आज हज़ारों-लाखों भाई-बहनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

आइए! परम आदरणीया दादी जी के जीवन के कुछेक अनछुए पहलुओं की चर्चा करें –

1.अन्तिम दिनों में दादी जी में बेहद की उपरामता देखी : दादी प्रकाशमणि जी यज्ञ का हर कार्य करते और हरेक भाई-बहन से मिलते न्यारी और प्यारी रहती थीं। दादी से जब भी मिलना होता तो ऐसे ही लगता कि जैसे वे उपराम हैं, किसी और दुनिया में हैं। दादी के बोल अपनापन लिए हुए होते थे, साथ ही वैराग्यवृत्ति दिलाने वाले भी होते थे। इतने बड़े यज्ञ की संभाल करते हुए भी दादी हमेशा कहती – कराने वाला करा रहा है, मैं तो निमित्त मात्र हूँ।

2.दादी माँ में बेहद की ममता और दिव्यता देखी : दादी जी केवल ज्ञान-योग से ही पालना नहीं करती अपितु शारीरिक रूप से भी सभी यज्ञ-वत्सों का ख्याल रखती थीं। सर्दियों के दिनों में हम एक-एक भाई को बुलाकर मुख में टोली खिलाना, मक्खन-मानी खिलाना दादी की दिनचर्या हुआ करती थी। किसी भाई की तबियत खराब हो जाती तो दादी जी स्वयं मिलने भी पहुँचती और हर प्रकार की सुविधा भी दिलवाती थीं।

3.दादी जी बड़े प्यार से शिक्षा-सावधानी देती थीं : बात उन दिनों की है जब मैं यज्ञ में समर्पित हुआ ही था,

ब्र.कु. आत्म प्रकाश जी को टोली (प्रसाद) खिलाते हुए दादी प्रकाशमणि जी

मुझे योग करने की बहुत रुचि थी। मधुबन में शान्ति स्तम्भ के निकट ट्रेनिंग सेक्शन की छत पर, रात्रि को देर तक जाग कर अपनी अवस्था पक्की करने के लिए योगाभ्यास किया करता था। कुछ समय के बाद रात्रि के पहरे वाले भाई ने यह बात दादी जी को बता दी तो दादी जी ने बड़े प्यार से मुझे बुलाया और कहा – देखो आत्म भाई, तुम सारे दिन भण्डारे में हार्ड सेवा करते हो और रात्रि को देर तक योग करते हो, यह ठीक नहीं है। वैसे तो योग करना अच्छा है लेकिन यदि आपकी तबियत खराब हो गई तो क्या करोगे? योगी माना जिसका जीवन संतुलित हो। दादी जी की इस बात को मैंने दिल से स्वीकार किया और अपने जीवन को संतुलित बनाया। दादी जी किसी को भी समझानी देने के लिए बहुत अपने-पन और प्यार से कोई बात बताती थीं, फलस्वरूप सामने वाला बदल भी जाता और सम्बन्ध भी अच्छे बने रहते।

4.दादी जी प्रतिदिन भोलेनाथ के भण्डारे में चक्कर लगाती थीं : दादी प्रकाशमणि जी का बाबा के भण्डारे में आना बड़ा कॉमन होता था। वे चारों ओर घूम कर देखती कि चीज़ें बेतरतीब तो नहीं पड़ी हैं। कई बार दादी जी हमें कहती, यह टोली ऐसे नहीं, ऐसे बनाओ। दादी भोजन के विषय में भी समय-प्रति-समय निर्देश देती थीं। यह सब बातें देखकर मुझे ऐसा आभास होता था कि दादी जी केवल प्रवचन करने में ही पारंगत नहीं हैं अपितु प्यारे बाबा के यज्ञ का हर कार्य उन्हें बखूबी करना आता है।

5.ब्रह्मा बाबा की फोटो कॉपी थीं दादी जी : दादी प्रकाशमणि, ब्रह्मा बाबा की हूबहू प्रति थीं। बच्चों की प्यार से पालना करना, बेहद की वैराग्य वृत्ति रखना, हर छोटी-से-छोटी बात को स्वयं देखना, प्रत्येक भाई-बहन की बात को सुनना और समुचित हल प्रदान करना आदि-आदि बातें ब्रह्मा बाप समान ही दादी के जीवन में देखी। दादी की नज़र बहुत पारखी थी, वे एक बार में ही मिलकर सामने वाले को पहचान जाती थीं और उन्हें वैसी ही सेवा देती थीं।

6.दादी जी की सादगी बेमिसाल थी : आदरणीया दादी जी का समस्त जीवन सादगी का उदाहरण रहा। वे कम खर्चा और बालानशीन की एक जीती-जागती मिसाल थीं। एक बार की बात है, नक्की झील का पानी सूख गया था तो दादी जी स्वयं सबको साथ लेकर मिट्टी निकालने के लिए पहुँच गईं ताकि उस मिट्टी का बाबा के बगीचे में खाद के रूप में उपयोग किया जा सके। यह दृश्य देखकर मैं मन-ही-मन सोच रहा था कि इतनी बड़ी संस्था की मुखिया और इतनी सादगी! दादी जी हर छोटे-से-छोटे कार्य को करने के लिए सदा स्वयं तत्पर रहती थीं। वास्तव में यह एक सच्चे और सादगी पसंद लीडर की निशानी है।

7.बीमारी के समय भी दादी जी मुस्कराती थीं : दादी सदैव कहती थीं कि शरीर तो मात्र गाड़ी है और

आत्मा है उसका ड्राईवर। यदि चालक ठीक हो तो कैसी भी गाड़ी को चला सकता है। उनसे मिलकर लगता था कि जैसे दादी देह में होते हुए भी विदेही हैं। अन्त समय में भी दादी जी ने योग-शक्ति द्वारा हँसते-हँसते रोग पर विजय प्राप्त की।

8.दादी जी सबको एकता के सूत्र में बाँध कर रखतीं: दादी को हरेक को साथ लेकर चलना आता था। भाई-बहनों से जाकर पहले से ही मिलना, उनकी विशेषताओं का वर्णन करना, हरेक को चांस देना, हरेक को आगे बढ़ाना दादी जी का जैसेकि मूल स्वभाव था। कई बार हमने देखा कि किसी काम को करने के लिए मन न होते भी, सभी का मन रखने के लिए, सभी को आदर देने की दृष्टि से दादी जी किसी बात विशेष में शामिल हो जाती थीं।

9.दादी, दाता और रहमदिल थीं: दादी जी से मिलने कोई भी आता, वे उन्हें स्थूल और सूक्ष्म हर प्रकार से भरपूर करके ही भेजती थीं। दादी माँ, दया की साक्षात् देवी थीं। उनसे किसी का भी दु:ख देखा नहीं जाता था। यज्ञ में काम करने वाले श्रमिकों व अन्य को सर्दियाँ आने से पहले ही वस्त्र-कम्बल आदि देना, उनके बच्चों का ख्याल करना जैसेकि दादी जी का धर्म और कर्म था।

10.दादी जी अथक और निर्माणचित्त थीं: बात सन् 2000 की है, मैं अमरीका, कनाडा, मैक्सिको और ग्वाटेमाला आदि देशों की सेवा पर जा रहा था। जाने से पूर्व मैं दादी जी से मिलने उनके कॉटेज में गया लेकिन बाहर बैठी बहन ने कहा, दादी जी की तबियत ठीक नहीं है, अभी आप उनसे नहीं मिल सकते हैं। दादी जी ने यह सुन लिया और अंदर से ही आवाज़ देकर मुझे कमरे में बुला लिया। दादी जी ने वरदानों से भरपूर किया और शक्तिशाली दृष्टि देकर मुझे विदेश सेवा की सफलता के लिए बधाई दी। विदेश सेवा के दौरान मुझे दादी जी के वरदानी बोल सदा याद आते रहे, परिणामस्वरूप हज़ारों आत्माओं की सेवा हुई और मेरा यह विदेश दौरा सफलतम रहा। मेरा परम सौभाग्य है कि ऐसी महान हस्ती दादी जी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। दादी माँ ने मुझे जीवन के हर मोड़ पर सावधानी-समझानी दी और सदैव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। ऐसी परम श्रद्धेय दादी जी का मैं कितना ही धन्यवाद करूँ, कम ही होगा। दादी जी के साथ के स्वर्णिम क्षणों को याद कर मैं गद्‌गद् हो जाता हूँ और सोचता हूँ कि यह मेरा पार्ट कल्प-कल्प के लिए ड्रामा की नूँध हो गया। ❖

रक्षाबन्धन का त्योहार

ब्र.कु.राजेन्द्र, मुजफ्फरनगर

आया लेकर खुशियाँ अपार
रक्षाबंधन का त्योहार

जब भी ये त्योहार है आता,
मन में नई तरंगें लाता।
रिमझिम-रिमझिम बरसे बादल,
इन्द्रधनुष नभ में मुसकाता।
पवित्रता इसका आधार,
रक्षाबंधन का त्योहार।।

शिव बाबा का मस्त महीना,
सिखलाता हर्षित हो जीना।
याद की यात्रा दिव्य बनाये,
सिखलाये योगामृत पीना।
पवित्र हो सबका व्यवहार,
रक्षाबंधन का त्योहार।।

ये रक्षा-सूत्र मंगलकारी,
अपनाते सारे नर-नारी।
मीठे बच्चो, प्यारे बच्चो,
हो जाओ पावन, निर्विकारी।
पवित्रता का करो इकरार,
रक्षाबंधन का त्योहार।।

आओ मिल संकल्प ये लायें,
देह अभिमान को दूर भगायें।
शिवबाबा का यही संदेश,
देही-अभिमानी बन दिखलाएँ।
दिव्य गुणों से करें श्रृंगार,
रक्षाबंधन का त्योहार।।

पुरुषोत्तम संगमयुग और इस विश्व विद्यालय के नाम का रोचक इतिहास

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

गतांक में आपने पढ़ा : इस विश्व विद्यालय का प्रारंभिक नाम पड़ा 'ओम मण्डली', बाद में बाबा ने इसे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम दिया। सरकार के कुछ नियमों के अनुसार हम विश्व विद्यालय शब्द को इकट्ठा ना लिखकर अलग-अलग ही लिखते हैं। यह विश्व विद्यालय न तो सरकार से अनुदान लेता है और न ही जनता से दान लेता है बल्कि इसके सदस्य ही इसे स्वैच्छिक सहयोग के आधार पर चलाते हैं। इसमें ब्रह्मा बाबा हमारे अलौकिक पिता, मातेश्वरी अलौकिक माता तथा हम सब दैवी बहन-भाई हैं। आगे पढ़िए...

सन् 1968 में ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि और मुझे आबू बुलाया और प्रॉपर्टी आदि खरीदने की स्वीकृति दी ताकि इस विश्व विद्यालय का विकास अच्छी तरह से हो सके। दादा आनन्द किशोर, दीदी मनमोहिनी, दादी प्रकाशमणि और मैं – हम चार की कमेटी बैठती थी और ब्रह्मा बाबा के मार्गदर्शन के आधार पर ट्रस्ट बनाने का नक्की किया गया जिसका नाम वर्ल्ड रिन्युअल स्प्रिच्युअल ट्रस्ट रखा गया क्योंकि तब तक ब्रह्मा बाबा की यही मान्यता थी कि ब्रह्माकुमारी नाम का शब्द हमारे किसी भी दस्तावेज में सरकार से रजिस्टर कराने के लिए उपयोग न करें। जैसे-जैसे संस्था बढ़ती गई तो एक सोसायटी बनाने की जरूरत महसूस हुई और इसी कारण ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी की स्थापना हुई। हम सब सोचते थे कि अव्यक्त बापदादा सोसायटी के नाम में ब्रह्माकुमारी शब्द का प्रयोग करने की अनुमति नहीं देंगे पर हमारे दिल की भावना को देखते हुए शिवबाबा ने ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी बनाने की स्वीकृति दी और उसी आधार पर उसे मुंबई में रजिस्टर्ड कराया गया। जब यह सोसायटी बनी तो उसकी उपयोगिता के बारे में हमारे आदरणीय दैवी भ्राता जगदीश ने मुझे लिखत भेजी और मैंने उसमें थोड़ा परिवर्तन कर जगदीश भाई को वापस भेजा। इस लिखत के अंदर सोसायटी के बारे में लिखा गया है कि यह शैक्षणिक संस्था भारत के प्राचीन काल में जो नालंदा विश्वविद्यालय तथा तक्षशिला विश्वविद्यालय थे, जहाँ हज़ारों बच्चे पढ़ते थे या वर्तमान दुनिया के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, हावर्ड आदि हैं, की तरह शिक्षा के क्षेत्र में अलौकिक कारोबार करने के लिए बनी है। सोसायटी का कारोबार करने के लिए माउंट आबू में जो नई जमीन ली गई, उसका नाम 'ज्ञान सरोवर', दिल्ली में 'ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर (ओ.आर.सी.)' तथा हैदराबाद में 'शान्ति सरोवर' रखा गया, तीनों ही ब्रह्माकुमारीज़ एज्युकेशनल सोसायटी के अंग हैं।

बाद में सुप्रीम कोर्ट ने माउंट आबू में नया निर्माण कार्य करने पर प्रतिबंध लगा दिया और इसी कारण माउंट आबू में विश्व विद्यालय का विस्तार करने के बजाय आबू तलहटी में विस्तार के बारे में सोचा गया। उस समय यज्ञ में दो मत थे कि विश्व विद्यालय का विस्तार माउंट आबू में होना चाहिए या तलहटी में होना चाहिए। इस पर काफी चर्चा चल रही थी फिर दादी प्रकाशमणि ने मुझे बुलाया और कहा कि आपको बाबा ने जगह के बारे में निर्णय करने

का वरदान दिया है इसलिए आप ही बताओ कि यज्ञ का आगे का विकास कहाँ पर हो, माउंट आबू में हो या तलहटी में हो? मैंने दो-तीन दिन संपूर्ण रीति से सोचने के बाद एक पेज का रिपोर्ट बनाया कि भविष्य का विस्तार तलहटी में ही होना चाहिए। यह तब हो सकेगा जब अव्यक्त बापदादा तलहटी में आने की स्वीकृति देंगे। दादी को हमारी बात अच्छी लगी और उन्होंने मेरा यह पत्र दिल्ली में गुलजार दादी को भेजा और बाबा ने संदेश में जवाब दिया कि आबू रोड और माउंट आबू एक ही हैं, एक ऊपर है तो एक नीचे है लेकिन हैं तो एक ही। अगर बच्चों ने आबू रोड में कारोबार का विस्तार किया तो बाबा आबू रोड में भी आयेंगे। फिर बाबा ने मुझे संदेश में डायरेक्शन दिया कि जितनी हो सके, उतनी ज्यादा जमीन तलहटी में ले लो ताकि भविष्य में विस्तार में काम आ सके। इस प्रकार से शान्तिवन की रचना हुई और आज तो यह प्रश्न ही नहीं है कि यज्ञ का विस्तार माउंट आबू में होना चाहिए या नीचे होना चाहिए। ज्ञान सरोवर में जो एकेडमी बनी जिसका नाम 'एकेडमी फॉर ए बैटर वर्ल्ड' रखा गया, उसका भी बहुत अच्छा कारोबार चल रहा है। उसके विस्तार के लिए ऊपर जगह की स्वीकृति नहीं मिली इसलिए आबू रोड में सोसायटी के नाम पर तपोवन की जमीन ली गई।

आठ अप्रैल 2011 से 13 अप्रैल 2011 तक चली वार्षिक मीटिंग में जो ईश्वरीय सेवाओं की योजनाओं पर विचार चला, उसमें यह बात भी आई कि इस प्लेटिनम जुबली वर्ष में हम ईश्वरीय विश्व विद्यालय की कोई भी एक संस्था चाहे ट्रस्ट या सोसायटी या फाउंडेशन को यूनिवर्सिटी के रूप में रजिस्टर्ड करें, सरकार से उसकी मान्यता मिले और यूनिवर्सिटी के रूप में कारोबार प्रारंभ हो। अभी तक यह सुझाव विचाराधीन है परंतु एक बात है कि यूनिवर्सिटी के बनने से एक नया इतिहास रचा जायेगा क्योंकि जब मैंने एक अनन्य भाई का वसीयतनामा बनाया, जो यज्ञ का पहला वसीयतनामा था तो इसे अव्यक्त बापदादा को संदेश के रूप में भेजा जिसमें इस वसीयतनामे के एग्जीक्यूटर के रूप में दादी प्रकाशमणि का नाम लिखा और उनके नाम के बाद लिखा – Dadi Prakash Mani or successor in her office अर्थात् दादी प्रकाशमणि के बाद जो भी यज्ञ की मुख्य प्रशासिका होंगी, वह इस वसीयत को कार्यान्वित कर सकती हैं। जब मैंने बाबा को इस विल का ड्राफ्ट भेजा तब अव्यक्त बापदादा ने सुझाव दिया और बाबा ने लिखवाया – Successor in her office and/or title. अर्थात् जो आज इस विश्व विद्यालय की मुख्य संचालिका का ऑफिशियल डेजीगनेशन एडमिनिस्ट्रेटिव हेड है, उस टाइटल में भी अगर परिवर्तन हो तो उसी टाइटल से यज्ञ की मुख्य संचालिका ही यह कारोबार करेगी।

जब मेरे पास बाबा का यह संदेश आया तो मैंने पूछा कि टाइटल शब्द की क्या जरूरत है, अभी तो हमारे पास डॉक्यूमेन्टस हैं जिसमें एडमिनिस्ट्रेटिव हेड का पद तो फाइनल है, उसमें परिवर्तन की गुंजाइश नहीं है। बाबा ने कहा, बच्चे, आगे का इतिहास देखते रहो कि इस विश्व विद्यालय के कारोबार में क्या-क्या परिवर्तन होता है अर्थात् उसके पदाधिकारियों के नाम, रूप, पद में परिवर्तन होगा, वह क्या होगा, वह तो ड्रामा ही बतायेगा। हम तो समय के साथ साक्षी होकर अपनी अवस्था और स्थिति को बनाने में लगे हैं। इस लेख में मैंने विश्व विद्यालय के नाम का जो संक्षिप्त इतिहास लिखा, उसमें कोई संशोधन हो तो बतायें। ❖

दृष्टि का कमाल

• ब्रह्माकुमार मोहन लाल रणधीर, ज़ोड़ा (केउन्झर)

पारिवारिक खटपट तथा व्यापार में घाटा लग जाने के कारण मैं पूरी तरह दुखी एवं अशान्त रहता था। कभी-कभी मन करता था कि आत्महत्या कर लूँ तो शान्ति मिल जायेगी, फिर शास्त्रों की बात याद आती थी कि आत्महत्या करना महापाप है और मरने के बाद आत्मा भटकती रहती है। इस तरह मैं और परेशान हो जाता था।

दृष्टि द्वारा शान्ति का अनुभव

एक शाम दुकान में बैठा यह सोच रहा था कि क्या करूँ, इसी बीच एक ब्रह्माकुमार भाई जो मेरे पड़ोसी हैं, आए और बोले, आज मेरे घर चलिये। उनके घर गये तो वहाँ बातों-बातों में ईश्वरीय ज्ञान की बात चली, उन्होंने कुछ फोटो भी दिखाये। दूसरे दिन सेन्टर पर चलने का अनुरोध किया। मैं अनुरोध को टाल न सका, एक अन्य भाई के साथ सेन्टर पर गया। निमित्त टीचर के सामने हम बैठ गए, वह मुसकराते हुए दृष्टि देने लगी। **उनकी गहरी दृष्टि पड़ते ही मैं बिल्कुल शान्त होता चला गया। मुझे अपने आप पर भरोसा नहीं हो रहा था कि मैं इतना शान्त कैसे हो गया। हमेशा परेशान, बेचैन एवं अशान्त रहने वाला युवक आज इतनी शान्ति अपने जीवन में पहली बार महसूस कर रहा था,** साथ ही मेरी आँखें बंद होने लगी पर बहन जी लगातार दृष्टि देते रहे। कुछ देर बाद उन्होंने ओमशाान्ति बोली, तब मेरी आँखें खुलीं फिर ब्रह्मा भोजन कराया एवं अगली बार आने का निमंत्रण दिया। उस दिन के बाद मेरे जीवन में परिवर्तन आने लगा, फिर कभी-कभी सेन्टर जाने लगा, मुरली क्लास में बैठने लगा। इस तरह मुझे बाबा का ज्ञान मिला।

बच्चे, फिक्र मत करो

एक बार मैं शिवरात्रि की सेवा के लिए सेन्टर पर गया था। मेरे घर से सेन्टर 15 कि.मी. दूर है। लौटते समय रात्रि के दस बज गये। मैं दुकान पर ही सो गया। हमारा ज़ेवरात का धंधा है। अमृतवेले भगवान शिव को याद कर, मुरली पढ़, ज़ेवरात से भरा बैग हाथ में ले मैं दुकान से निकला। रास्ते में कुछ लोग खड़े थे, मैंने सोचा, टहलने वाले होंगे। नज़दीक गया तो मुँह बाँधे कई युवक सामने आ गये और पूछा, कहाँ से आ रहे हो? मैंने पूछा, क्यों पूछ रहे हो? इतने में उन्होंने मुझे पीछे से पकड़ लिया। अपने हथियार निकाल लिए। एक ने मुँह दबाकर रखा, दूसरे ने गिरा दिया, तीसरे ने मुझे ज़मीन पर दबाए रखा, चौथा जेब की तलाशी लेने लगा। मुझे दो साल पहले की ऐसी ही लूट याद आ गई तब मेरे पास कुछ भी नहीं बचा था। बेबसी में मेरी आँखें बंद हो गई और मन ही मन कहा, बाबा, आप हमेशा कहते हो, बच्चे, चिन्ता मत करना, हम बापदादा बैठे हैं, हम सदा बच्चों के साथ रहते हैं, बाबा, अब मदद कीजिए, जल्दी आइये। तभी मुझे अहसास हुआ, एक लुटेरा मेरी जेब में हाथ डालकर कुछ खोज रहा है और साथ-साथ तुरंत यह आवाज़ भी आई, **'बच्चे, फिक्र मत करो, हम आ गये।' इधर मेरे कानों में आवाज़ आई और सभी डाकू भागो-भागो की आवाज करने लगे। एक मिनट के अंदर सभी किधर भाग गये, कुछ पता नहीं चल सका। आस-पास कोई भी नहीं था।**

सामान सहित सुरक्षित था मैं

लाखों रुपये के ज़ेवरों से भरा बैग मेरी पीठ के नीचे दबा पड़ा था। बैग का सारा सामान सही-सलामत था पेंट की जेब में पड़े दो मोबाइल,

मोटरसाइकिल की चाबी तथा दुकान की चाबी भी ठीक-ठाक थी। सिर्फ कमीज के ऊपर की जेब में पड़ा लगभग एक हज़ार रुपया, एक बाबा का पेन, एक आर.सी.एम. का पेन डाकू ले गये थे। मैं आश्चर्य में पड़ गया कि लुटेरों से मैं तथा मेरा सामान सही-सलामत बच कैसे गये जबकि पहले डाके में सामान, पैसा सब चला गया था, यह कैसे हुआ? मुझे वह आवाज़ याद आने लगी, 'बच्चे, तुम फिक्र मत करो, हम आ गये', ऐसी आवाज़ पहले कभी नहीं सुनी थी। मुझे बाबा की याद आई कि मैंने तो बाबा को याद किया था। मैंने मन ही मन कहा, आप कहाँ हैं बाबा, यह आवाज़ कहीं आपकी तो नहीं थी, क्या ये आपकी ही शक्तियाँ काम कर गईं जो लुटेरे मुझे छोड़कर भाग गये। उसके बाद बाबा का धन्यवाद करते हुए मैं अपने कार्य में लग गया।

बाबा ने ही मुझे बचाया था

एक सप्ताह के बाद मधुबन जाने का समय आ गया। चौबीस फरवरी, 2010 को रात 10 बजे पावन धरती मधुबन पहुँचे, वहाँ जाते ही मेरे विचार बदल गये। सोचने लगा, मैं पहले यहाँ क्यों नहीं आया? देखते ही देखते 28 फरवरी का दिन आया, अपने प्यारे बापदादा से मिलन मनाने का दिन। उस दिन मैं जीवन में पहली बार पूरी तरह चुप रहा। कैसे चुप रहा, मुझे भी पता नहीं चला। ठीक 7.30 बजे बापदादा वतन से आये, दृष्टि देते रहे। मैं भी बाबा के सामने बैठा था। दृष्टि मुझ पर पड़ रही थी। कुछ देर बाद बापदादा जैसे ही मुरली चलाने लगे, मुझे ऐसा लगा कि यह आवाज़ मैंने पहले कहीं सुनी है, मैं विचार करने लगा कि मैं तो यहाँ पहली बार आया हूँ, फिर मैंने कहाँ सुनी है। तब मुझे याद आया, उस दिन जब लुटेरों ने दबोच रखा था, तब हूबहू यही आवाज़ थी। कुछ ही पल में मेरी आँखों में आँसू आ गये। बाबा ने ही मुझे लुटने से बचाया था। यह अनुभव मेरे लिए यादगार बन गया। शुक्रिया बाबा, कोटि-कोटि शुक्रिया! ❖

दुआयें दो, दुआयें लो

ब्रह्माकुमारी बेबी, बोकारो

मैं पाँच वर्षों से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में शिवबाबा से आध्यात्मिक ज्ञान सीख रही हूँ। इसमें अन्य ज्ञान की बातों के साथ-साथ यह भी सिखाया जाता है कि दुआयें दो और दुआयें लो। मैं समझती थी कि मैंने कभी किसी का अहित किया नहीं तो फिर किसी के लिए क्या दुआ माँगूँ।

इस विश्व विद्यालय में सन् 2010 में सौ करोड़ शुभकामना के मिनट जमा करने का कार्यक्रम बना था। मैंने भी योग में बाबा से उन नि:सहाय लोगों के लिए दुआ माँगी जिनके परिवार आतंकवादियों के शिकार हो गये थे या प्राकृतिक आपदाओं में मारे गये थे।

एक सुबह मैं रसोईघर में गैस पर प्रेशर कुकर में दाल पका रही थी कि थोड़ी देर बाद कुकर फट गया जिसके कारण कमरे की छत में बड़ा छेद बन गया। कुकर छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गया। गैस चूल्हे के भी दो टुकड़े हो गये। उसी चूल्हे के पास एक फुट की दूरी पर मैं और मेरा दस वर्षीय लौकिक बेटा भी बैठे थे लेकिन हम दोनों के शरीर को एक कण ने भी नहीं छुआ। मैं निश्चिंत भाव से बैठी थी जैसे कुछ हुआ ही ना हो। थोड़ी देर बाद मुझे समझ में आया कि कुकर फटा है और मैं बाबा की गोद में बेफिक्र बैठी हूँ क्योंकि मैं हमेशा खाना बनाते समय बाबा के भोग के गीत गुनगुनाती हूँ और उस समय भी मैं गीत गा रही थी। तभी मुझे अहसास हुआ कि **मैंने दूसरों को जितनी दुआयें दी, उससे कई गुणा ज्यादा दुआयें मुझे मिलीं। हम जैसा कर्म करते हैं, उसका फल हमें तुरंत मिल जाता है।** ❖

दिल को मिला सुकून

● ब्रह्माकुमारी विमल परदेशी, पूना

सन् 2008 में दिल का दौरा पड़ने से मेरे पति की अचानक मृत्यु हो गई। मेरे सिर पर जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। पति की मृत्यु की दोषी मैं खुद को मानने लगी और सोचने लगी कि इतनी भक्ति की, व्रत किये फिर भी विधवा क्यों हो गई? मैं रोती रही। खाना ठीक से न खाने और तबीयत का ख्याल न रखने के कारण डायबिटीज़ हो गई। डॉक्टर ने चेकअप किया तो शुगर 400 तक पहुँच गई थी। मुझे अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस दौरान मेरी देवरानी मुझसे मिलने आई जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ईश्वरीय ज्ञान में चल रही है। उन्होंने मुझे शिव बाबा के ज्ञान के आधार पर जन्म-मृत्यु का राज़ समझाया लेकिन मेरी बुद्धि में उस वक्त कुछ भी नहीं आया। देवरानी बार-बार मिलने आने लगी और बाबा का ज्ञान सुनाती रही। एक दिन उसने कहा, तुम कृष्ण की भक्त हो, चलो तुम्हारे सखा से तुम्हें मिलाती हूँ। मैंने भी सोचा कि चलकर देखें तो सही, ये ब्रह्माकुमारी बहनें क्या ज्ञान सुनाती हैं, अच्छा लगा, फायदे का हुआ तो ले लेंगे, नहीं अच्छा लगा तो छोड़ देंगे। यह सोच कर मैं देवरानी के साथ नज़दीक की ब्रह्माकुमारी पाठशाला में गई और सात दिन का कोर्स किया।

मैं बेफिक्र बन गई

ज्ञान बहुत अच्छा लगा, फिर हर रोज़ मुरली सुनने की लगन लग गई। **मैं कृष्ण दीवानी गोपी, शिव-मुरली की दीवानी हो गई। झट से सभी काम निपटाकर मैं मुरली सुनने जाती रही। मेरी तो तकदीर ही बदल गई। मेरा जो लक्ष्य था ईश्वर प्राप्ति का और सबसे अलग बनने का, वह मुझे प्राप्त हुआ। मुझे मेरे शिवबाबा मिल गये। मुझे मेरा कल्प-कल्प का बिछुड़ा हुआ बेहद का परिवार मिल गया। मेरी खुशी का पार न रहा। न गृहस्थी की फिक्र, न दुनिया की फिक्र, सब बोझ बाबा ने ले लिये और मैं बेफिक्र बन गई। जीवन जीने की श्रेष्ठ कला मुझे इस राजयोग की पढ़ाई द्वारा मिल गई।** हर दिन की मुरली द्वारा प्यारे शिव बाबा एक-एक ज्ञान के नये-नये राज़ खोलते जाते हैं। कर्मों की गुह्य गति, आत्मा, परमात्मा, ड्रामा का सत्य ज्ञान बाबा सुनाते हैं इससे बुद्धि के पट खुलते जा रहे हैं।

मधुबन लगता है मायका

पहले, घर में किसी से मेरी बनती नहीं थी। शिवबाबा की श्रीमत प्रमाण चलने से मुझमें थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन आने लगा। अब घर में सभी का सहयोग मिल रहा है। दिल को चैन, सुकून मिल रहा है। अब जब भी डायबिटीज़ चेक कराती हूँ तो नार्मल निकलती है। पहले वक्त काटे नहीं कटता था, अब बाबा के साथ कब दिन निकलता है और रात होती है, पता ही नहीं पड़ता है। बाबा के साथ का अनुभव हर पल, हर घड़ी होता रहता है। शिवबाबा की याद जीने का सहारा बन गई है। इस जीवन रूपी नैया का खिवैया शिवबाबा बन गया तो इस भवसागर का डर ही नहीं रहा। प्रभु इसे पार कराकर मंजिल तक पहुँचायेंगे, यह विश्वास है। शिवबाबा से मिलकर मैं निहाल हो गई, मालामाल हो गई। मेरे जीवन का रुख ही बदल गया। मधुबन जाती हूँ तो, मायके पहुँच गई हूँ, ऐसा लगता है। ब्रह्मा बाबा की तस्वीर के सामने बैठ माँ की गोद में बैठने जैसी खुशी होती है और अतीन्द्रिय सुख मिलता है। हर आत्मा इस अतीन्द्रिय सुख का और मधुबन के अलौकिक परिवार का अनुभव करे, यही मेरी शुभकामना है। ❖

लाभ, लोभ का जनक

• ब्रह्माकुमार सौदानदत्त शर्मा, नालासोपारा (महाराष्ट्र)

पुराने जमाने की बात है, एक राजा और उसका प्रिय मंत्री घूमने निकले। चलते-चलते राजा की नजर एक व्यापारी पर पड़ी जो दुकान पर चिन्तित और उदास बैठा था। राजा के कहने से मंत्री ने व्यापारी को बुलाया और उदासी का कारण पूछा। उसने नम्रता के साथ कहा, राजन्! मैं साधारण व्यापारी हूँ। इस वर्ष जाड़े के मौसम में अपना सारा धन लगाकर 500 कंबल खरीदे थे परंतु भाग्य ऐसा निकला कि ठंड के दिन समाप्त होने को आये हैं और एक भी कंबल नहीं बिका। यह सुनकर राजा के हृदय में दया का भाव उदय हो गया।

दूसरे दिन राजसभा में राजा ने सभी सभासदों के समक्ष एक संदेश प्रसारित किया कि कल जो भी सभा में आयेगा, अपने साथ एक नया कंबल अवश्य लेकर आयेगा। जो नहीं लायेगा, उस पर 500 रुपये जुर्माना होगा। आश्चर्य से भर देने वाली यह सूचना सुनकर सभी अचंभे में पड़ गये लेकिन कारण पूछने की हिम्मत किसी की नहीं हुई।

शाम को सभा समाप्त होने पर सभी सभासद उसी व्यापारी की दुकान पर पहुँच गए। व्यापारी आश्चर्य में पड़ गया कि आज तो ग्राहक पर ग्राहक दुकान पर आ रहे हैं। मन ही मन प्रसन्न भी हुआ और उसने ढाई रुपये वाला कंबल पांच रुपये में बेचना शुरू कर दिया। जब कुछ कंबल बिक गये तो उसने देखा कि चार-पाँच ग्राहक और आ रहे हैं। फिर उसने पाँच के बजाय पच्चीस रुपये में देना शुरू कर दिया। फिर भी सारे कंबल थोड़ी देर में ही बिक गये। अपनी आवश्यकता के लिए उसने एक कंबल बचाकर रख लिया था। अंत में मंत्री जी भी उसी दुकान पर कंबल लेने पहुँच गये और दुकानदार को कहा, मुझे एक कंबल जरूर चाहिए, चाहे कीमत कितनी भी ले लो। व्यापारी ने कुछ देर सोचकर अपने लिए रखा हुआ कंबल निकाल दिया और कहा, पूरे ढाई सौ रुपये लूँगा। मंत्री ने सोचा, चलो 250 रुपये ही तो खर्च होंगे, नहीं तो कल दरबार में तो 500 रुपये दंड के देने होंगे इसलिए उन्होंने कंबल खरीद लिया।

मंत्री जी के जाने के बाद व्यापारी फिर सोच में पड़ गया कि अगर मैं सारे कंबलों को 250 रुपये के हिसाब से ही बेचता तो आज एक लाख पच्चीस हजार रुपये होते किंतु मैंने समय को नहीं पहचाना। वह फिर उदास हो गया। शाम को राजा और मंत्री घूमने निकले तो राजा ने मंत्री से कहा, आज वह बनिया बड़ा ही खुश होगा, मैं उसे देखना चाहता हूँ। यह सुनकर मंत्री ने कहा, राजन्, इस मानव की बड़ी विचित्र गति है।

राजा ने देखा कि व्यापारी फिर उदास बैठा था। उसे बुलाकर पूछा कि आज तो तेरा सारा माल बिक गया है फिर उदास क्यों बैठा है? वह लगभग रोते हुए बोला, राजन्! आपकी दया से मेरे सारे कंबल तो बिक गए पर पश्चाताप एक ही बात का है कि सारे कंबल 250 रुपये प्रति कंबल के हिसाब से बेचता तो कितना धनवान हो जाता।

आश्चर्य में पड़कर राजा ने मंत्री की ओर देखा। मंत्री ने कहा, राजन्! यह हर मनुष्य की कहानी है, जितना लाभ बढ़ता है, उतना ही लोभ बढ़ता जाता है। यह व्यापारी कल माल न बिकने पर परेशान था, आज माल बिक जाने पर भी परेशान है। इसीलिए तो कहा है –

ज्यों-ज्यों लाभ वृद्धि को पावे,
त्यों-त्यों लोभ भागता आवे।

इसलिए ब्रह्माकुमार भाई-बहनों और अन्य सभी भाई-बहनों से भी निवेदन है कि यदि वे किसी वस्तु का व्यापार करते हैं तो उन वस्तुओं पर उचित कमीशन लगाकर मूल्य निर्धारित कर लें और उसी मूल्य पर प्रत्येक ग्राहक को बेचें अन्यथा आप भी उस व्यापारी की तरह माल न बिकने पर भी परेशान और माल बिकने पर भी परेशान। ❖

रेकी और राजयोग

● सुजाता मोंगिया, गाज़ियाबाद

सन् 2007 में मैंने प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा में जाना शुरू किया था। मैं 'रेकी ग्रैंड मास्टर' हूँ, उन्हीं दिनों मैंने अपना 'रेकी ट्रेनिंग सेन्टर' खोला था। अपने सेन्टर की व्यस्तता के कारण मैं कभी-कभी ही जा पाती थी। मैं जब भी वहाँ जाती, बहन जी से अपने मन की सारी बातें कहती।

मेरी दुनिया बाबा में सिमटने लगी

शुरू-शुरू में मेरा बाबा के साथ संबंध सिर्फ औपचारिकता मात्र रहा लेकिन बहन जी हमेशा कहती थी कि बाबा से योग लगाकर अपनी बातें सीधे उन्हीं से कहो। उन्होंने इस कार्य में मेरा बहुत साथ दिया। धीरे-धीरे मेरा मन बाबा में लगने लगा। फिर तो मैं अक्सर वहाँ जाकर मुरली सुनती और डायरी में बाबा के महावाक्य लिख लाती। बाबा से मन की बातें करते-करते मेरी दुनिया भी बाबा में सिमटने लगी। **बाबा एक दोस्त, माता-पिता और गुरु सभी रूप से मुझे प्यार देने लगे। ऐसा लगने लगा कि बाबा खुद-ब-खुद मेरे जीवन में शामिल होते जा रहे हैं। मुझे हमेशा यही लगा कि बाबा का साथ मैंने नहीं किया, बाबा ने खुद मुझे अपने साथ शामिल किया है। मैं जब भी परेशान होती, सेंटर चली जाती यह जानने के लिए कि आज मेरे बाबा, इस परिस्थिति से पार होने के लिए मुझे क्या तैयारी करने के लिए कहेंगे। मुझे बड़ा ही आश्चर्य होता जब मैं मुरली में उसी परिस्थिति से ही संबंधित सुझाव लिखे पाती।**

मुरली द्वारा मिलते हैं समाधान

एक दिन मैं बहुत परेशान थी, रोते-रोते सेन्टर पर पहुँची। उस दिन की मुरली में आया, **'अगर तुम अब भी रोते हो तो बाबा से दूर हो और बाबा पर भरोसा नहीं है।'** मुझ पर बाबा की कृपा विशेष है, यह तो मैंने पहले दिन से ही जान लिया था। जब मैं पहले दिन आश्रम गई थी तो उस दिन गीत बजा था, प्रभु तेरे रंग में हम रंग गए ऐसे..।' इस गीत को सुनकर ऐसा लगा कि मैं ही इस गीत द्वारा बाबा को अपने मन के भाव बता रही हूँ। फिर तो मैंने बाबा की बहुत-सी सीडी खरीदी। कोई भी गीत सुनती हूँ तो ऐसा ही लगता है कि हर गीत के भाव मेरे अपने ही हैं।

रेकी और राजयोग में समानता

सेन्टर जाते-जाते मुझे धीरे-धीरे समझ में आने लगा कि रेकी कोर्स में जो भी हम सिखाते हैं, बाबा का सेन्टर भी उन सब बातों को बड़ी सहज तकनीक से सिखा रहा है। 'राजयोग मेडिटेशन' रेकी कोर्स का एक तरह का पूरा हिस्सा है। बाबा अपनी मुरली में वही सब शामिल किए हुए हैं जो हम रेकी में अलग-अलग कोर्स के रूप में सिखाते हैं कि चिन्ताओं, परेशानियों और परिस्थितियों से कैसे सहज रूप से बाहर आएँ। बाबा न केवल हमें याद रूपी 'सुरक्षा कवच' में सुरक्षित रहना सिखाते हैं बल्कि यह भी बताते हैं कि किसी भी व्यक्ति को बाबा के वायब्रेशन (जिसे रेकी में हीलिंग कहते हैं) द्वारा ठीक किया जा सकता है, कहीं भी दूर बैठे व्यक्ति को राहत पहुँचाई जा सकती है। यह सब रेकी कोर्स में भी शामिल है। इसे रेकी में Healing और Distant

Healing करना कहते हैं। बस अंतर इतना ही है कि रेकी कोर्स शुल्क देकर सीखा जाता है और प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में वही तकनीक राजयोग मेडिटेशन द्वारा एकदम मुफ्त सिखाई जा रही है।

बहुत भाग्यशाली हूँ जो बाबा ने हाथ थामा

मेरी आप सबसे यही प्रार्थना है कि बाबा की इस कृपा का भरपूर लाभ उठाएँ। बाबा का प्यार और मुरली का दुलार ही रेकी का पूरा सार है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा चलाए जा रहे अभियान का हिस्सा बन, बाबा की शक्ति एवं उनकी मुरली के ज्ञान द्वारा अपनी सूक्ष्म शक्तियों का उपयोग कर अपने जीवन को सार्थक बनाएँ। ये सेन्टर हर शहर में बने हुए हैं। तभी तो मेरा मन कह उठा, 'बाबा, आपने कमाल कर दिया।' मैं अपने रेकी सेन्टर में आने वाले हर विद्यार्थी को बाबा का परिचय जरूर देती हूँ और खुद उन्हें सेन्टर में लेकर भी जाती हूँ। मैंने अपने कमरे में बाबा का संदेश, 'बच्चे, चिन्ता मत करो, मैं बैठा हूँ' लगा रखा है। जब भी इसे पढ़ती हूँ, मन खुशी से भर जाता है कि कितनी बड़ी हस्ती ने मेरा हाथ थाम लिया है। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ जो बाबा ने मेरी रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया है। आज मैं जो कुछ भी हूँ, वह बाबा की कृपा से हूँ। मेरा पूर्ण समर्पण भाव से बाबा को नमस्कार! मासिक पत्रिका 'ज्ञानामृत' को पढ़कर मेरा मन बहुत खुश होता है कि कितने ही भाई-बहनें इस पत्रिका का रसपान कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने में लगे हुए हैं। बाबा का हरेक बच्चा इतनी सादगी और सौम्यता लिए हुए है जिनसे मिलकर सारे प्रश्न अपने आप समाप्त हो जाते हैं। जिन्होंने राजयोग मेडिटेशन नहीं सीखा, उनसे मेरी प्रार्थना है, वे सेन्टर जाकर सात दिन का कोर्स जरूर करें। जीवन में राजयोग मेडिटेशन को शामिल कर उसे सफल बनाएँ। बाबा अपने प्यारे बच्चों को अपनी बाँहों में समेटने के लिए सदैव तैयार बैठे हैं। बस जरूरत है आपके पहले कदम की।

'आ हिम्मत का एक कदम उठा प्रभु मंजिल तक पहुँचा देंगे।'

एक हार्दिक प्रार्थना है जो भाई-बहन ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ लिया करें वो इस पत्रिका को ऐसे किसी व्यक्ति को पढ़ने के लिए दें जो बाबा को नहीं जानता जिससे उसे भी बाबा का परिचय मिले। इस महत्त्वपूर्ण ईश्वरीय सेवा में अवश्य अपना योगदान दें। ❖

ये कृतियाँ

प्रद्युम्न नाथ तिवारी 'करुणेश', इलाहाबाद

ब्रह्मा बाबा की ये कृतियाँ
इनमें कोई नहीं विकृतियाँ
अपने परम प्रेम के कारण
बनीं आज जन-जन की श्रुतियाँ
विश्व में इनकी है जो शान
देश को इन पर है अभिमान
यह गुमान है हमें

धवल वस्त्र धारण कर आयीं
धवल कीर्ति भू पर फैलायीं
धवल हिमालय की धरती पर
धवल भारती को ये भायीं
इनकी धवल प्रीति का गान
किया करते हैं सभी सुजान
यह गुमान है हमें

सबसे अद्भुत सबसे न्यारी
ममता की क्वाँरी महतारी
इनके मीठे बोल सभी को
लगते हैं सुन्दर सुखकारी
बाँटती हैं ये सबको ज्ञान
दूर करती मन का अज्ञान
यह गुमान है हमें

ऐसा माली आया जिसने
मधुबन में सींची जो क्यारी
सारे जग में महक रही है
उस माली की यह फुलवारी
गंध की हैं ये ऐसी खान
मिला इनको ऐसा वरदान
यह गुमान है हमें

मनसा सेवा – एक शौक

● ब्रह्माकुमार डॉ.अशोक जेठवा, अहमदाबाद (महादेव नगर)

परमात्म प्रेमी आत्माओं का सहज कर्त्तव्य है परमात्मा की आज्ञा व परमात्मा द्वारा दिये गए कार्यों को साकार करना। वर्तमान समय परमात्मा पिता का इशारा है कि **'जो दुःखी, अशांत हैं उनकी मनसा सेवा कर उन्हों को भी कुछ न कुछ सहारा दो, अब रहमदिल बनो। यह संकल्प भी साथ में करो कि चलते-फिरते, अमृतवेले आत्माओं की मनसा सेवा भी अवश्य करेंगे।'**

उपरोक्त परमात्म महावाक्यों के परिप्रेक्ष्य में मनसा सेवा की कुछ सरल बातें यहाँ पर प्रस्तुत हैं:

व्यक्ति के लिए मनसा सेवा:

हम सभी जानते हैं कि मनसा सेवा अर्थात् मन के विचारों द्वारा सेवा। इसके लिए आवश्यक हैं शुद्ध, शक्तिशाली और श्रेष्ठ विचार। जब भी हम सुनें कि फलाना व्यक्ति बीमार है तो तुरंत ही श्रेष्ठ संकल्प उठे कि वह ठीक हो जाए। उसकी पीड़ा कम हो जाए। हम सड़क पर जा रहे हैं, सामने हॉस्पिटल है, एम्बुलेन्स जा रही है, दुर्घटना हो गई है, ऐसे समय पर भी हम यही शुद्ध और रहम भावना के संकल्प कर सकते हैं जिससे पीड़ित आत्मा को बल मिलता है।

दुनिया में भी जो लोग शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प करते हैं, उन्हें सफलता मिलती है। बीमा कम्पनी के एक विक्रेता ने यह तय किया कि वह जब भी किसी व्यक्ति से बीमा बेचने के संदर्भ में मिलने जाएगा, तो उसके ललाट में देखकर बहुत प्यार से, शुद्ध भावना से, मन ही मन कहेगा, 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ' विक्रेता का यह अनुभव था कि ऐसा करने से ग्राहक प्यार का अनुभव करते थे। विक्रेता का निःस्वार्थ प्यार ग्राहकों के दिल के द्वार खोल देता था और फिर वह बीमा की बात करता था, जिसको लोग मना नहीं कर पाते थे। इसी युक्ति से वह दुनिया का बहुत ही सफल विक्रेता बना। ब्रह्माकुमारी चंद्रिका बहन ने एक बार अपना अनुभव सुनाया कि सेन्टर के बाहर निकलते ही सड़क पर बहुत अच्छा मकान आता था। जब भी कहीं जाना होता था तो उस मकान पर नजर पड़ती ही थी। इस प्रकार दिन भर में कम से कम 3-4 बार यह संकल्प उठता था कि यहाँ रहने वाला व्यक्ति परमात्म ज्ञान का लाभ ले। एक दिन वही हुआ और उस भाई के द्वारा बहुत ही विशेष सेवाएं हुई। मन से किया हुआ शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प व्यक्ति को मदद करता है।

स्थान के लिए मनसा सेवा:

जिस स्थान पर हम रहते हैं, वहाँ सब ठीक चलता रहे, उसके लिए निमित्त बने हुए व्यक्ति अपनी क्षमता, विशेषता, रुचि अनुसार सब ठीक-ठाक करते ही हैं। हम स्वयं भी इसमें मददगार बन सकते हैं। हम चलते-फिरते भी उस स्थान के प्रति, वहाँ के लोगों के प्रति मनसा सेवा कर सकते हैं। कई बार हमें लगता है कि यहाँ ऐसा हो जाए तो बहुत अच्छा हो। (उदाहरण के लिए ट्रैफिक ठीक से चले इसके लिए पुल बन जाए)। देखा गया कि उस शुभ संकल्प अनुसार वहाँ पर उस प्रकार का कार्य हुआ भी है। यह कार्य किसी भी स्तर का, किसी भी स्थान पर हो सकता है। मनसा सेवा छोटे से छोटा

कार्य कर सकती है तो बड़े से बड़ा भी।

घटना के प्रति:

हर रोज हम कई घटनाओं के बारें में सुनते हैं, जिनमें से ज्यादातर बुरी, दु:ख देने वाली होती हैं। परमात्मा पिता का कहना है कि हम घटना के विस्तार में न जाएँ पर उस द्वारा जो हानि हुई है उसके प्रति योगदान दें जिससे उस घटना से जुड़े लोगों को और प्रकृति को भी राहत मिले। अहमदाबाद में एक बार विमान दुर्घटना हुई थी। संस्था के कई भाई-बहनों ने उस स्थान पर जाकर योग किया जिससे बहुत अच्छी सेवा भी हुई और योग करने वालों को बहुत अच्छे अनुभव भी हुए।

देश के प्रति मनसा सेवा:

जब दिल्ली में कॉमनवेल्थ गेम्स हुए, उनकी तैयारी के समय काफी ऊपर-नीचे हुआ था और लोग आलोचना पर ज्यादा ध्यान दे रहे थे। समझदार लोगों का कहना था कि अभी पहले शांति से, निर्विघ्न रूप से खेलों को पूरा करें फिर अन्य बातों को देखना चाहिए क्योंकि खेलों का ठीक आयोजन नहीं हुआ तो भारत देश का नाम बदनाम होगा। भारत के आदर्श नागरिक होने के नाते हम भी इस प्रकार के हर कार्य के लिए शुभभावना रखें। यही शुभकामनाएं लोगों की वृत्ति को बदलने का कार्य करेंगी। हमारे देश में कई प्रकार की समस्याएं हैं, उन सभी को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी मनसा शक्ति का उपयोग करना चाहिए।

कार्य के प्रति मनसा सेवा:

ब्रह्माकुमारीज़ के सभी भाई-बहनों का यह अभ्यास और अनुभव भी है कि हर कार्य के प्रति मन से किया गया योगदान उसे सहज ही पूर्ण करा देता है। नए कार्य के लिए, कार्य में आये हुए विघ्न को जीतने के लिए, कार्य की सफलता के लिए, कार्य से जुड़े लोगों के उमंग-उत्साह के लिए मनसा सेवा, कार्य के परिणाम को नए क्षितिज की ओर ले जाएगी।

शुभ, शुद्ध, स्वच्छ संकल्प करना अपना शौक बनाएं:

आप मंदिर के सामने से गुजर रहे हैं, लोगों को भगवान के सामने अपनी बातें रखते देख तुरंत संकल्प करें कि इनकी मनोकामनाएँ पूरी हों। पूरा दिन जिनके साथ आपको काम करना है उनके प्रति भी सवेरे-सवेरे शुभ संकल्प करें। आप लिफ्ट में है, ट्रैफिक सिग्नल पर खड़े हैं, यात्रा कर रहे हैं, ऐसे समय पर आस-पास के वातावरण, व्यक्तियों, परिस्थिति के प्रति आवश्यकता अनुसार शुद्ध संकल्प करते रहें। आजकल एस.एम.एस, ब्लु टुथ और ऐसी कई अन्य भौतिक सुविधाएं मोबाईल में हैं जिनके उपयोग से कई छोटे-बड़े काम होते हैं तो क्यों नहीं हम भी एक-दूसरे को शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प दें। वे भी जरूर अन्य तक पहुँचते ही हैं। हमारे द्वारा किया हुआ शुद्ध, श्रेष्ठ संकल्प वायुमंडल में फैलकर अन्य को बल दे, प्रेरणा दे, काम कराए – यह शौक हमें खुशी भी देगा और अन्य में हमारे प्रति मेरेपन की भासना भी पैदा करेगा। हमें देखकर उन्हें लगेगा कि ये मेरे हैं, भले ही आप का उनसे परिचय भी नहीं हुआ हो। क्या ऐसे शौक के लिए हम तैयार हैं?

भारत को सोने की चिड़िया बनाने में शुद्ध संकल्पों का योगदान:

भारत फिर से सोने की चिड़िया बने, यही हम सब का प्रयास है। एक व्यक्ति हर कार्य में माहिर हो, यह हो नहीं सकता। पर वह शुभ, शुद्ध संकल्प द्वारा हर कार्य में सहयोग कर ही सकता है। परमपिता परमात्मा शिव अपना कार्य इस संस्था द्वारा कर रहे हैं। आओ, हम सभी भी इस कार्य में अपने श्रेष्ठ, शुद्ध, ऊँचे संकल्पों का दान दें। भारत को स्वर्ग बनाने में अपना योगदान दें। ❖

ग्लोबल अस्पताल

दुखी रोगी आत्माओं के लिए सहारा

मार्च 25, 1995 के दिन स्वयं बापदादा द्वारा ग्लोबल अस्पताल के प्रति उच्चारे हुए महावाक्य : **''मधुबन (माउंट आबू) की हॉस्पिटल सबके लिए और आस-पास वालों के लिए भी एक सहारा अनुभव होगी कि अगर सहारा मिलना है तो यहाँ मिलना है, तन और मन दोनों का।''**

इन महावाक्यों के अनुसार सचमुच मधुबन की ग्लोबल अस्पताल स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में अनेक आत्माओं के तन और मन का सहारा बन रही है। केवल राजस्थान ही नहीं बल्कि भारत के कोने-कोने से अनेक आत्मायें सहारा ढूँढ़ते हुए माउंट आबू पहुँच रही हैं।

दुनिया में एक ओर जितनी तेज़ी से स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में दिन-प्रतिदिन नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, उतनी तेज़ी से ही रोगियों की संख्या घटने की बजाय बढ़ती जा रही है। ज्ञानवान आत्मायें तो जानती ही हैं कि यह समय सबके हिसाब-किताब चुक्तू होने का है और तन की व्याधि के इलाज अर्थ अनेक जगह भटक कर अंतत: बाबा के अस्पताल पहुँच रही हैं।

उदाहरणार्थ गुजरात की मुडेरा तहसील खाड़ी मेहसाणा से आई पिंकी का ग्लोबल अस्पताल में सिर एवं पीठ की नसों का सफलतापूर्वक जटिलतम ऑप्रेशन किया गया। गरीब माँ-बाप लाखों रुपये खर्च करने में असमर्थ थे। छह महीने की पिंकी के माता-पिता अनेक अस्पतालों का चक्कर लगाने के बाद माउंट आबू ग्लोबल अस्पताल में पहुँचे जहाँ पिंकी के सिर और पीठ की नसों का ऑप्रेशन किया गया।

पिंकी की रीढ़ की हड्डी में खराबी होने के कारण नसों का फोड़ा हो गया था एवं दिमाग में पानी भरने के कारण दिमाग में प्रेशर बढ़ गया था। ग्लोबल अस्पताल के सर्जन डॉ.दिगन्त पाठक एवं डॉ.संजय वर्मा की टीम ने दोनों ऑप्रेशन एक साथ करने का निर्णय लिया। ऑप्रेशन लगभग तीन घंटे चला। ऑप्रेशन में पीठ की नसों को सुलझाकर अंदर डाला गया, छेद को बंद किया गया और सिर में प्रेशर कम करने के लिए दिमाग में नली डालने का भी सफल ऑप्रेशन किया गया।

सफलतापूर्वक किये गये ऑप्रेशन के बाद पिंकी बिल्कुल स्वस्थ है। इस तरह के जटिल ऑप्रेशन करने की आधुनिक सुविधा आस-पास के क्षेत्र में न होकर केवल अहमदाबाद में है।

इस प्रकार ग्लोबल अस्पताल निर्धन, बेसहारा आत्माओं का सहारा बनता जा रहा है। पिंकी जैसे अनेक बच्चों का इलाज ग्लोबल अस्पताल के बाल स्वास्थ्य फंड के तहत अत्यंत कम खर्च में या नि:शुल्क किया जाता है। अत: आप सभी भाई-बहनों से अनुरोध है कि वर्तमान समय अनेक प्रकार की व्याधियों से ग्रस्त आत्माओं को राहत पहुँचाने के इस पुनीत कार्य में यथासंभव सहयोग कर दुआयें जमा करने के पात्र बनें। ❖

प्रकाशन सामग्री से संबंधित सूचना

ज्ञानामृत कार्यालय में भेजी जाने वाली प्रकाशन सामग्री (लेख, कविता, गीत, अनुभव, संस्मरण, पत्र आदि) अथवा अन्य प्रकार के पत्र-व्यवहार में कृपया अपना पूरा पता, सेवाकेन्द्र का नाम, फोन नं. अथवा मोबाइल नं. अवश्य लिखें।

मृग-मरीचिका के बीच जल

● ब्रह्माकुमारी रश्मि पाण्डे, आनंद (गुजरात)

जिस प्रकार भूख, भोजन के लिए विवश करती है; थकावट, सोने के लिए विवश करती है; उसी प्रकार संसार में दुख का अनुभव होना विवश करता है कि अब हम ईश्वर को जानें।

क्या साधनों से दुख कम हुआ

इसमें संदेह नहीं कि वैज्ञानिकों ने शुभ भाव से, संसार के दुख को दूर करने का बहुत हद तक यत्न किया है जिसके लिए हम विज्ञान के हार्दिक आभारी हैं। परंतु अफसोस! ऐसा करने से भी संसार का दुख कम न हुआ। बाह्य उन्नति तो बहुत हुई परंतु आंतरिक पतन होता गया। विज्ञान ने मनुष्य को वो सब साधन उपलब्ध करा दिये जिससे मनुष्य को बहुत आराम मिला परंतु क्या दुख कम हुआ? क्यों आत्मिक शान्ति नहीं मिली? सुख के साधनों से संपन्न मनुष्य भी परेशान और तनावग्रस्त होकर प्राय: यह पूछते देखे जाते हैं कि शांति कहाँ है।

शान्ति पदार्थों में विद्यमान है ही नहीं

जिस शांति की खोज में विज्ञान और संसार का प्रत्येक प्राणी लगा हुआ है, हकीकत यह है कि वह संसार और उसके पदार्थों में विद्यमान है ही नहीं। आज तो मानो विज्ञान भी आश्चर्यवत् हो, चीख-चीख कर कह रहा है, देख लो, मैंने संसार का भव्य उन्नति का दृश्य तुम लोगों के सम्मुख ला खड़ा किया परन्तु फिर भी उस सच्चे सुख का कोई पता नहीं मिला जिसकी खोज स्वभावत: सभी मनुष्यों की जारी है।

शान्ति रूपी जल मिला

मेरा प्रश्न है, क्या हम इस दुख में प्रसन्न रह सकते हैं? उत्तर होगा, नहीं। तो क्या हम सुख की इच्छा और खोज छोड़ सकते हैं? पुन: उत्तर होगा, नहीं। अब संसार में तो सुख है नहीं और सुख की खोज छूटती भी नहीं। तो फिर क्या करें? उत्तर यही मिलता है कि या तो भटक-भटक कर उस मृग की भाँति मर जायें जो प्यास का मारा मरुभूमि में माया-मरीचिका के पीछे दौड़ता है पर कहीं भी पानी नहीं प्राप्त करता या फिर किसी अन्य से पूछकर जल की खोज करें। संसार की मृग-मरीचिका में भटकते हुए, मुझे शान्ति का जल तब प्राप्त हुआ जब मैंने भगवान को जाना और पहचाना। मेरा अनुभव है कि सिर्फ वे ही हमारी उस आवश्यकता की पूर्ति हैं जो संसार के जड़ या चेतन द्वारा कदापि पूरी नहीं हो सकती।

परमात्मा को जानकर ही मिलता है परम आनन्द

परमात्मा ही सत-चित-आनंद स्वरूप हैं। वे सर्वशक्तिवान, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता, बड़े रहमदिल हैं। उनको जानकर वह परम आनंद मिलता है जिसकी हमें सदियों से खोज थी। उनसे संबंध जुड़ते ही हमारी निर्बलतायें दूर होने लगती हैं, पाप भस्म हो जाते हैं, चित्त सदैव प्रसन्न रहने लगता है, अपार सुख-शान्ति मिलती है अन्यथा तो इसके विपरीत ही बातें होती हैं।

निर्णय हमें करना है

समय संकेत दे रहा है कि अब हमें परमधाम से अवतरित परमपिता परमात्मा को न केवल मानना अपितु जानना व पहचानना चाहिए यद्यपि पसंद अपनी-अपनी..। अब या तो ईश्वर के वरदानों की छत्रछाया में आकर, वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के कई जन्मों तक सुख-शांति-समृद्धि का अधिकार प्राप्त कर लें अथवा 'बात तो सही है लेकिन समय नहीं है', कहकर स्वयं को वंचितों की सूची में शामिल कर लें। दोनों में से किसे चुनें, यह निर्णय हमें स्वयं करना है। ❖

विकास और आध्यात्मिकता

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

संसार के हर क्षेत्र में अप्रतिम विकास हो रहा है। पिछले 10 वर्षों से इस विकास ने द्रुत गति पाई है। संचार के क्षेत्र को देखिए, घर बैठे दुनिया के किसी भी कोने को देखना, किसी से भी बातचीत, आदान-प्रदान, लेन-देन करना अब खेल जैसा प्रतीत होता है। नभ, जल, थल – तीनों क्षेत्रों में सुरक्षित, सुविधाजनक और तीव्र गति के विभिन्न प्रकार के साधनों ने दुनिया को मानो छोटा कर दिया है। निर्माण के क्षेत्र में नित नये डिजाइन, विधियाँ और कम समय में पूर्णता ने मानव मन में विश्वकर्मा के धरती पर उतर आने का भ्रम पैदा कर दिया है। सजावट और श्रृंगार के नकली साधन, असली सोने हीरे को शर्मसार कर रहे हैं। कहाँ तक गिनाएँ, हर दिन, हर क्षेत्र में किसी न किसी सुविधाजनक चीज़ का ईजाद हो जाना ही आजकल का मुख्य समाचार रहता है।

आध्यात्मिक विकास के लिए कोई मंत्रालय नहीं

परंतु विकास की इस दौड़ में एक क्षेत्र ऐसा है जहाँ न कोई आविष्कार, न कोई गति-प्रगति और न कोई चहल-पहल है। यह क्षेत्र दिनों-दिन गर्त में धंसता जा रहा है। अब तो इसका पतन इतना हो चुका है कि इसके अवशेष पाताल लोक में भी ढूँढ़ने पर भी शायद ना मिलें। उपेक्षित, अनइच्छित, अनुपयोगी-सा बना दिया जाने वाला यह क्षेत्र है आध्यात्मिकता और नैतिकता का क्षेत्र। प्रमाण की क्या आवश्यकता है, हम देख रहे हैं कि देश-विदेश की सरकारों के पास सैकड़ों प्रकार के मंत्रालय हैं पर आध्यात्मिकता और नैतिकता के विकास का कोई मंत्रालय विश्व में कहीं नहीं है, मंत्रालय नहीं तो मंत्री कहाँ से होगा।

सरकारों की बात छोड़िए, निजी संस्थानों में भी ऐसा कोई प्रकोष्ठ नहीं है और परिवारों में भी अब नैतिकता, आध्यात्मिकता पुराने फैशन की, बूढ़े-बीमारों और निठल्ले लोगों के दिल बहलाव और समय व्यतीत करने की बातें समझी जाने लगी हैं।

बदल गई विकास की अवधारणा

इसका बहुत बड़ा कारण यह है कि आज हमारी विकास की अवधारणा बदल गई है। आज विकसित व्यक्ति वो है जो अधिकाधिक भोग के पदार्थों के साथ जीता है। भोग करना उस व्यक्ति की आदत बनती जाती है। फिर भोग के पदार्थों के प्रति नित नई-नई लालसाएँ जागृत होती जाती हैं। इन लालसाओं की पूर्ति के लिए वह बेहिसाब संपत्ति जमा करने की विवेकहीन दौड़ में पड़ जाता है। यह संपत्ति सीधे तरीके से ना मिले तो भ्रष्टाचार, चोरी, झूठ, मिलावट, चोरबाज़ारी, रिश्वत, नाजायज मुनाफा आदि की सीढ़ियाँ चढ़ी जाती हैं। इस प्रकार भौतिक विकास की यह आधुनिक परिभाषा उपभोक्तावादी संस्कृति का कारण है। भोगने की यह संस्कृति केवल भोग के पदार्थों को ही दौलत मानती है और इनके संग्रह के प्रति मन को उकसाती है।

यह संस्कृति अनावश्यक चीज़ों को भी इस प्रकार प्रस्तुत करती है कि वे भी आवश्यक लगने लगती हैं। विज्ञापन और प्रचार के ज़रिए यह लोगों की वे ज़रूरतें पैदा कर देती है जिनकी कहीं ज़रूरत नहीं। प्रतिदिन नये-नये कपड़े, नये-नये प्रसाधन, नये-नये जूते-चप्पल, नये-नये सजावट के सामान और अन्य भी उपभोग के नित नये-नये सामानों को प्रचारित करके लोगों को सम्मोहित करके उनका समय, संकल्प, धन खर्च करवाती है।

गलत तरीकों से धन कमाकर

लोग कुछ चीज़ें खरीदते हैं। यह खरीदारी अभी पूरी हुई होती है कि अन्य बहुत-सी चीज़ें उनके लिए आवश्यक हो गई होती हैं। इनके लिए फिर गलत हथकण्डे अपनाते हैं, फिर और नई लालसाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस प्रकार यह दुष्चक्र चलता रहता है।

यंत्रों के बीच खो गए मंत्र

उपभोक्तावादी संस्कृति में यंत्रों का महत्व बढ़ गया और मानव मंत्रों का महत्व भूल गया। मंत्र का अर्थ कोई कठिन संस्कृत के शब्द नहीं बल्कि आत्म-उन्नति के लिए ईश्वर प्रदत्त सत्य ज्ञान की बातें हैं। आज यंत्रों से वस्तुओं का बहु मात्रा में उत्पादन होता है। फिर उनकी खपत के लिए अनियंत्रित उपभोग को उकसाया जाता है। इस बहु और अनावश्यक उत्पादन के कारण प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर दोहन, क्षरण हो रहा है जो पर्यावरण संकट का मूल कारण है। विकास की इसी भौतिक होड़ के कारण दुनिया को कई बार नष्ट करने वाले हथियार बन रहे हैं और शिक्षा में से भी मूल्यों को निकाल, उसे केवल रोजी-रोटी का साधन बना दिया गया है। अतः आज की सर्व समस्याओं के मूल में विकास की भौतिकवादी, स्वार्थपरक, भोगवादी धारणा ही है। महात्मा गांधी ने इस अवधारणा के लिए कहा था, 'यह दूसरों का नाश करने वाली और खुद नाशवान है।' इससे उबरने के लिए आवश्यक है विकास को सही अर्थों में समझने की।

विकास का आधार भोग्य पदार्थ ही नहीं वरन् आत्मिक गुणों के आधार पर भी विकास होता है। सच्चे अर्थों में उन्नति का पैमाना आत्मिक उन्नति ही है। जिसके पास संतोष, सहिष्णुता, सहयोग, शान्ति, धैर्य, प्रेम, पवित्रता, खुशी, स्थिरता, एकाग्रता नहीं वास्तव में वही पिछड़ा हुआ है। पिछड़ेपन से बाहर निकलने के लिए उसे भी इन मूल्यों को आत्मसात् करना होगा।

मरणधर्मा शरीर के लिए इतना संग्रह क्यों?

मूल्यों को आत्मसात् करने के लिए आत्म-अनुभूति आवश्यक है। आत्मा को जानने के बाद ही शरीर और पदार्थों की असारता, क्षणभंगुरता का ज्ञान होता है। व्यक्ति को महसूस होता है कि इस जरा-मरण के शिकार शरीर के लिए इतना सब जमा करने का कोई औचित्य नहीं है।

शरीर भी एक उत्पाद ही है

भौतिक उत्पादों की अनावश्यक भीड़ में यह मानव शरीर भी एक उत्पाद से अधिक कुछ नहीं है। अन्य उत्पादों की तरह इसकी भी निर्माण तिथि और क्षरण तिथि निश्चित है। जैसे घी, चीनी, आटा आदि मिलाकर हम लड्डू बना देते हैं फिर बने हुए लड्डुओं को पैक कर, पैकेट पर लिख देते हैं 'Best Before 6 months of Manufacturing date' अर्थात् निर्माण तिथि से छह मास बाद तक ही प्रयोग के लिए उत्तम। विचार की बात है कि घी, चीनी, आटा अलग-अलग पड़े रहते तो केवल छह मास नहीं बल्कि इससे भी लंबे समय तक ठीक-ठाक पड़े रहते पर भून कर मिला दिये गये तो प्रयोग की अवधि सीमित हो गई। इसी प्रकार शरीर भी तो पाँच तत्वों से मिलकर बना उत्पाद ही तो है। इसकी भी जन्मतिथि और क्षरण की तिथि निश्चित रहती है। जैसे अन्य उत्पादों पर सावधानी लिखी रहती है, गर्मी या धूप या आग या चुंबक आदि से दूर रखें। इसी प्रकार इस शरीर रूपी उत्पाद के लिए भी सावधानियाँ हैं, इसे आग, पानी, हथियार, नशीले पदार्थ आदि भिन्न-भिन्न प्रकार की घातक चीज़ों से बचाकर रखा जाये। इसे संभालकर रखने वाले 80 वर्ष तक भी ठीक-ठाक पार कर जाते हैं। लापरवाही बरतने वाले या कर्मों की भूल का एवजा भुगतने वालों को गर्भ तक से लेकर कभी भी इसके नष्ट होने का साक्षी होना पड़ता है पर कुल

मिलाकर है यह उत्पाद ही, अन्य उत्पादों की तरह इसका उपयोग भी आत्मा ही करती है।

शरीर में रहते भी शरीर से भिन्न है आत्मा

साधारण समझ की बात है जब शरीर भी उत्पाद है, निश्चित समय पर नष्ट हो जाने वाला है तो इसके लिए अन्य उत्पादों का जखीरा क्यों खड़ा किया जाये? प्रयोगकर्त्ता आत्मा है तो क्यों न उसके काम आने वाली अविनाशी शक्तियों के संग्रह में मन को लगाया जाये।

आत्मा अति सूक्ष्म प्रकाश कण है जो मानव की भ्रकुटि के मध्य स्थित होकर शरीर संचालन करती है। अदृश्य होते भी यह अति शक्तिशाली है। शरीर में रहते भी यह शरीर से न्यारी है। मान लीजिए हम एक मकान में बैठे हैं और अचानक शोर मचता है कि भागो, भागो, मकान में आग लगी है। हम सभी उठकर भागेंगे परंतु कमरे में पड़े हुए सोफा-टेबल आदि तो नहीं भागेंगे क्योंकि ये जड़ हैं। इसी प्रकार, मानव शरीर के दुर्घटनाग्रस्त होने पर इसमें निवास करने वाली आत्मा, इसे अयोग्य समझ छोड़कर भाग जाती है लेकिन शरीर के अन्य अंग, आंख, नाक, दांत, पाँव, हाथ आदि नहीं भागेंगे क्योंकि ये जड़ शरीर का हिस्सा हैं। चेतन तो केवल आत्मा है जो शरीर में प्रवेश करती है और प्रतिकूल परिस्थिति में इसे छोड़कर भाग जाती है। अत: आत्मा चेतन है और शरीर से भिन्न है।

आध्यात्मिक विकास से निकलता है निर्विघ्न भौतिक विकास का मार्ग

आत्मा का सत्य परिचय परमात्मा पिता देते हैं जो वर्तमान समय प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से दे रहे हैं। आत्म ज्ञान होने पर मानवात्मा की ज्ञान-दृष्टि आत्मा के स्वरूप पर स्थिर होकर आत्मानन्द का अनुभव करती है। भ्रकुटि में स्थित प्रकाश कण पर घंटों तक ध्यान केन्द्रित कर अतीन्द्रिय आनन्द पाया जा सकता है। इस आनन्द के बाद परमात्म मिलन का आनन्द पाना सरल हो जाता है। **परमात्मा भी ज्योति के एक बिन्दु ही हैं पर गुणों में सिन्धु हैं। वे सूर्य, चंद्र, तारागण से भी पार परमधाम के निवासी हैं। आत्म-अनुभूति और आत्म-साक्षात्कार कर लेने के बाद, संकल्प बल से आत्मा परमधाम में सहज ही पहुँच जाती है और परम ज्योति के साथ स्व ज्योति के मिलन की सुंदर अनुभूति करती है। इस मिलन से आत्मा में भरता है अलौकिक सुख जिसे पाने के बाद भौतिक लालसाएँ रहती ही नहीं।** ईश्वर पिता से यह मिलन जिसे राजयोग कहा जाता है, तृप्ति का मार्ग है, भ्रष्टाचार के उन्मूलन का मार्ग है और आंतरिक विकास के चरम बिन्दु पर ले जाने वाला है। इसी आध्यात्मिक विकास का अनुसरण करते हुए निर्विघ्न भौतिक सुख-सुविधाओं का मार्ग प्रशस्त होता है। ❖

मेरा बाबा

खुशदेव सिंह, बकरियाँवाली, सिरसा

मेरा बाबा कहते-कहते बाबा मेरा हो गया
कल तक थी जो रात अंधेरी, आज सवेरा हो गया।
मुरली में तुम बाबा हमको कितना पढ़ाते
इस दुनिया में जाने न कोई, वो सब बात बताते
मीठे बच्चे सुनते-सुनते, मैं मीठा बच्चा हो गया
कल तक थी जो रात अंधेरी, आज सवेरा हो गया।
पिता बन कर देते पालना, टीचर बन सिखलाते
सतगुरु बन हम बच्चों पे बाबा वरदान लुटाते
अंदर ऐसा दीप जला बाहर उजियारा हो गया
कल तक थी जो रात अंधेरी आज सवेरा हो गया।
तुम संग बैठूँ, तुम संग खेलूँ और तुम्ही संग खाऊँ
अब तो यही तमन्ना बाबा तुमसा ही बन जाऊँ
दुख की कोई बात नहीं, अब सुख ये घनेरा हो गया
कल तक थी जो रात अंधेरी, आज सवेरा हो गया।

झाँकियों के..पृष्ठ 3 का शेष

हम नया शरीर लेंगे परंतु वास्तव में हमारा भाव यह नहीं है। हम तो पुराने संस्कारों को बदलकर नये सतोगुणी संस्कार धारण करने की क्रिया को 'नया जन्म लेना' मान रहे हैं। ऐसा नया जन्म तो जीते-जी मरने से होता है अर्थात् पुरानी बातों को और पुराने संस्कारों को भुलाने से होता है। अब आप इस प्रकार का नया 'मानसिक जन्म' मनाइये। केवल श्री कृष्ण को 'योगीराज' कहते रहने से मुख मीठा नहीं होगा बल्कि जब आप स्वयं भी योगीराज बनेंगे, आपका मुख तो तभी मीठा होगा।

अत: जैसे लोग अपना शारीरिक जन्मदिन मनाने के लिए अपने कुछ मित्र-संबंधियों को आमंत्रित करते हैं और उन सभी को यह सूचना होती है कि आज अमुक व्यक्ति का जन्मदिन है, वैसे ही आप भी मित्र-संबंधियों को तथा उनको भी जिनको कि आप अपना वैरी या विरोधी मानते रहे हैं, एकत्रित करके उनके सामने स्पष्ट घोषणा कीजिए कि अब हमारा नया जन्म हो गया है, अब हम पुरानी बातों को अर्थात् वैर-विरोध को और मोह और लोभ आदि को भूल चुके हैं। अब हम स्वयं को उस परम पवित्र परमपिता परमात्मा की संतान निश्चय करते हैं, यही हमारा नया जन्म है, यही हमारे नये जीवन का नया सूत्र है। हम अब पवित्रतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे, यही हमारे नये जीवन की विधि है। ऐसा करने पर ही श्री कृष्ण जन्मोत्सव की सार्थकता है। ❖

एक-दो की गलतियाँ नोट नहीं करो वरन् सहयोग रूपी नोट दो

दादी माँ की ममता

ब्र.कु. सुभाष, ज्ञान सरोवर

दादी प्रकाशमणि जी के साथ बिताये उन पलों की बहुत सारी स्मृतियां हैं, जिनमें दादी जी का मातृत्व व वात्सल्य झलकता है। जैसे माँ अपने बच्चों को खिलाए बिना कुछ भी नहीं खाती...ठीक वैसे ही दादी माँ भी बिना यज्ञवत्सों को खिलाए कुछ भी नहीं खाती थीं। उनका यज्ञवत्सों से कितना प्यार था, उसकी एक झलक इस प्रसंग में आप पायेंगे...

एक बार की बात है, आम की सीज़न अभी शुरू भी नहीं हुई थी। मुंबई से आम की एक पेटी आयी। दादी जी को भोजन में आम काटकर दिया गया तो दादी जी ने मुन्नी बहन से पूछा कि क्या सभी मधुबन निवासियों को भी आम मिला है? मुन्नी बहन ने कहा कि आम तो बहुत थोड़े आए हैं। ये केवल आपके लिए ही हैं। दादी जी ने कहा - दादी माना कौन? सभी मधुबन निवासी। दादी खा ले और मधुबन वालों को न मिले, यह दादी को पसंद नहीं। दादी अकेले ये आम नहीं खाएगी। भले ही एक-एक टुकड़ा मिले लेकिन मधुबन के सभी ब्रह्मावत्सों को मिलना चाहिए। पहले सभी को खिलाओ, बाद में उसमें से जो बचे, वो मुझे देना।

दादी जी ने मुरली क्लास में बताया कि देखो, मुंबई से दादी के लिए आम आये हैं, लेकिन दादी अकेले कैसे खा सकती है... इसलिए सभी को आम का एक-एक टुकड़ा क्लास की टोली में मिलेगा। और सचमुच क्लास के बाद टोली में सभी को आम दिया गया। इस घटना ने मधुबन निवासियों को गद्गद कर दिया और सभी की आँखों में प्रेम के मोती चमक उठे । दादी जी का वो असीम प्यार सब पर अपनी अमिट छाप छोड़ गया।

कितनी महान् थी ना हमारी दादी माँ...!! ऐसी ममतामयी माँ क्या चारों युगों में किसी को मिली होगी...!!!

मन के जीते जीत

● ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, दिल्ली (मजलिस पार्क)

'अरे, तू तो मेरे से भी ज्यादा बूढ़ी लग रही है' अपने लिए अचानक ये बोल सुन मैं चौंक उठी। सिर उठाकर देखा, सामने दादी जानकी जी थी। बात तीर की तरह मेरे दिल में लग गई। कुछ भी करूँ, जिधर भी जाऊँ, यही बात मन में गूँजती रही। मैं शारीरिक आयु में 68 वर्ष की होकर 94 वर्षीय दादी जी से भी अधिक बूढ़ी लगूँ..धिक्कार है..क्यूँ..क्यूँ..क्यूँ? सूक्ष्म में अपने अंदर को टटोला। कारण सामने स्पष्ट हुआ। विघ्नों की टेन्शन पाल ली थी।

एक बार अमृतवेले जब मैं बाबा के सम्मुख थी तो मानो बाबा मुझे कह रहे थे..बच्ची, मैं तो तुम्हें सब कुछ दे रहा हूँ न... कहीं भी कोई कमी तो नहीं छोड़ रहा... टेन्शन कांशेस होकर मुझसे लेना क्यूँ छोड़ दिया तूने... मैं तेरा हूँ..सच तो बिठो नच, बच्ची। तभी अनुभव हुआ..बाबा मुझे अपनी गोदी में लेकर बहुत प्यार कर रहे हैं..मैंने भरपूर दृष्टि ली..अपने को सशक्त महसूस किया..चित्त हर्षाया..मन मुसकाया..नयनकोर में दो बिन्दु चमके..दृढ़ संकल्प किया..मन ने कहा, कुछ भी हो जाये परंतु मेरी आध्यात्मिकता नहीं जानी चाहिए..उठ..कर्मठ..कूद जा मैदान में..एक योद्धा ने कहा था..एल्पस (पर्वत) है ही नहीं..और वह उस पर्वत को सैनिकों समेत लांघ गया..मैं तो उससे भी ऊपर परमधाम जाकर बैठ सकती हूँ..। बस फिर क्या था..बिजली-सी कौंध गई मन में..मैं जीवंत हो उठी..धुन सवार हो गई..करो..करो..करो..अंदर से आवाज आई..आई एम ओ.के.। इतनी खुशनुमा स्थिति में थी कि एक दिन बाथरूम में अचानक पैर फिसल गया, बाईं टाँग की हड्डी टूट गई। छह सप्ताह का प्लास्टर चढ़ गया। बैड रेस्ट हो गया पर अंदर से पुनः आवाज आई..तू ओ.के. है..अरे तेरा मुख तो चलता है..दिमाग तो ठीक है..मन तो दुरुस्त है..मैटर तो लिख सकती है न..क्या नहीं हो सकता..बस फिर क्या था, दृढ़ता दौड़ने लगी। बारह ज्योतिर्लिंगम मेला मैंने बुक किया हुआ था और 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम भी पहले से ही तय कर रखा था। दोनों कार्यक्रम दस दिन चले और वो भी बड़े पार्क में। बहुत ही सफल और निर्विघ्न रहे। मन खुश रहा और तन भी चला परंतु छह टाँगों पर।

तत्पश्चात् एक आँख में मोतियाबिन्द का ऑप्रेशन भी कराना पड़ा, फिर भी दिल बोला, आई एम ओ.के.। शिवरात्रि से एक मास पूर्व और आधा मास बाद तक हर रात लगातार मुझे सूखी खाँसी रही। रात भर मात्र दस मिनट आँख लगना और आधा घंटा खाँसी, यही क्रम चला। पेट, कमर, पसलियाँ सबने रात-रात हा-हा किया परंतु दिन भर खाँसी का नामोनिशान नहीं। तिस पर चमत्कार यह रहा कि शिवरात्रि के 25 बड़े कार्यक्रम किये। नेपाल तक भी गई। एक बार में घंटा-घंटा भाषण किया। खाँसी की अविद्या रही। मेरी साथी बहनें साक्षी हैं कि दिन में खाँसी आई नहीं, किसी भी रात खाँसी गई नहीं और कोई भी सेवा रुकी नहीं। कमाल है करन करावनहार बाप की।

'देखो न, चेहरे की लाल रंगत..अब तो राज दीदी एकदम स्वस्थ हैं..देखो न..कितनी एक्टिव लग रही हैं..शुक्र है परमात्मा का..।' ये कमेन्टस थे मेरे हितैषियों के। शिवरात्रि के फंक्शन में मुझे स्टेज पर देखकर सब यही कह रहे थे। मैं बहुत खुश थी। थैंक्स आदरणीया दादी जानकी जी के उन शब्दों का जो मेरे लिए ललकार बन गये। सच ही है, मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। ❖

1.बांबवडे (कोल्हापुर)- व्यसनमुक्ति अभियान के उद्घाटन बाद समूह चित्र में हैं व्यापारी संघ अध्यक्ष भ्राता शांताराम पोतदार, ब्र.कु. संगीता बहन तथा अन्य। **2.सुनाम (जेखेपल)-** शाश्वत यौगिक खेती विषय पर ग्रामीणों को संबोधित करती हुई ब्र.कु. जमीला बहन। **3.चिंचोली-** आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सर्कल निरीक्षक भ्राता बसवराज के., ब्र.कु. रत्ना बहन तथा अन्य। **4.बैंगलुरू (कुब्बन पेट)-** विनायक हाई स्कूल में 'टच द लाइट' कार्यक्रम के उद्घाटन बाद ईश्वरीय स्मृति में प्राचार्य भ्राता शंकरलाल, ब्र.कु. पवित्रा बहन तथा अन्य। **5.कडेगाव (सांगली)-** चीनी कारखाने के अध्यक्ष भ्राता मोहनराव कदम को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मीना बहन। **6.सुनाम-** शाश्वत यौगिक खेती सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए जिला अध्यक्ष प्लानिंग बोर्ड भ्राता गोविन्द सिंह लोंगोवाल तथा ब्र.कु. विजय बहन। **7.बाली चौकी (मण्डी)-** जिला परिषद अध्यक्ष भ्राता खीरामणि को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. प्रेमलता बहन तथा दीपा बहन। **8.लुधियाना (रायकोट)-** एस.डी.हाई स्कूल में ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. राधा माता। मंचासीन हैं ब्र.कु. प्रवीण बहन तथा प्राचार्या निर्मल बहन। **9.होशियारपुर (हरियाणा गाँव)-** मंदिर प्रधान को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन। **10.कड़पा-** केन्द्रीय जेल अधीक्षक को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. गीता बहन।

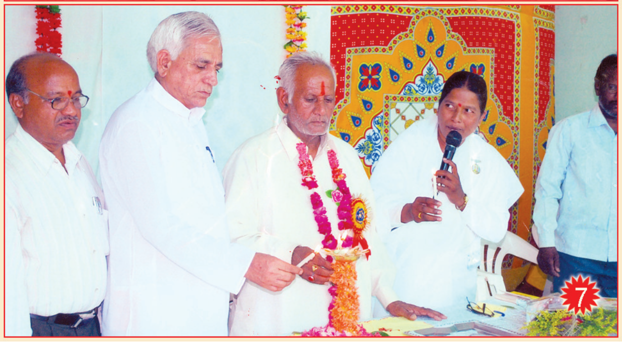

1.मुम्बई (बोरिवली)- 'द हीरो विदिन' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध अभिनेत्री बहन कुनिका लाल, फिल्म निदेशिका बहन कल्पना लाजमी, ब्र.कु. दिव्या बहन तथा अन्य। **2.फर्रुखाबाद-** प्लेटिनम जुबली निमित्त कार्यक्रम में मंचासीन हैं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भ्राता ओ.पी.सागर, ब्र.कु. मंजू बहन तथा अन्य। **3.रामपुर-** महिला संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए महिला कल्याण समिति उपाध्यक्षा बहन पुष्पा गुप्ता, ब्र.कु. पार्वती बहन तथा अन्य। **4.नई मुम्बई (वाशी)-** पुलिसकर्मियों को ईश्वरीय संदेश देती हुई ब्र.कु. उर्मिला बहन। **5.सिद्धपुर (धर्मशाला)-** ब्रह्माकुमारी पाठशाला के शुभारंभ अवसर पर शिवध्वजारोहण करते हुए मेजर पंकज शर्मा। साथ में ब्र.कु. उमा बहन तथा अन्य। **6.मुम्बई (डोंबिवली, दिवा)-** नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर के उद्घाटन बाद ब्र.कु. शकु बहन, डॉ. भ्राता प्रमोद जी तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **7.कोंढा (वरठी)-** आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए व्यापारी संघ अध्यक्ष भ्राता हरबंस लाल मक्कड़, ब्र.कु. ऊषा बहन, पूर्व डाकू भ्राता पंचम सिंह तथा अन्य। **8.जयसिंगपुर (सांगली)-** वृक्षारोपण करते हुए उपनगराध्यक्ष भ्राता कल्याण सिंग राजपूत तथा अन्य गणमान्यजन। साथ में ब्र.कु. भाई-बहनें।

निश्चिन्त जीवन

● ब्रह्माकुमार डॉ.संजय माली, पाचोरा

ध्यान उधर (परमतत्व में) और काम इधर (इस संसार में) वाली स्थिति से यह संभव होता है कि निराकारी स्वरूप में रहते हुए साकार में पार्ट बजाने की कला आ जाती है। यही शिक्षा राजयोग कहलाती है। फिर किसी भी मनुष्य के लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति दूर नहीं। अपने अनादि एवं निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी स्वरूप को निर्विघ्न रूप से याद करना ही सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ है। निरंतर निशिदिन परमात्म चिंतन करने से आत्मा पवित्र हो जाती है और अविनाशी सुख-शान्ति के साथ-साथ अनेकानेक शक्तियों की भी अधिकारी बन जाती है। यह निर्विवाद सत्य है।

निर्मोही ही विदेही

मन-वचन-कर्म की निर्मलता आत्मा को सशक्त तथा विशाल बनाती है, व्यक्तित्व में उत्कृष्टता भरती है, कर्म में श्रेष्ठता एवं नि:स्वार्थ भाव लाती है। निर्लिप्तता परम सुख की जननी है। निर्मोही बनकर ही साधक विदेही अवस्था को पा सकता है। मात्र निर्मोही होने के लिए नि:संग होना पड़ता है अर्थात् एक बाबा के सिवाय और कोई भी याद न आये। जो निरासक्त है, वह निरापद रूप से परमपद को प्राप्त कर लेता है। इसमें बहुत बड़ा सुख है। निर्मानचित्त होने से हमारी अवस्था आपेही श्रेष्ठ हो जाती है, तब योगी अनायास ही सभी के आदर को प्राप्त हो जाते हैं। निरहंकारी बनने से देवत्व समीप आता है। निजस्वरूप को पाने के लिए हमें निगर्वी के साथ-साथ निक्रोधी बनना होता है, ऐसा ज्ञानियों का अनुभव है। नि:स्वार्थ और निर्लोभी वृत्ति से मनुष्य निष्कपट बनता है, इसी से आत्मा का परम कल्याण होता है।

निश्छल स्वभावी सबका प्रिय

निर्वैर परमात्मा के नित्य संग से हम भी निर्वैर बन जाते हैं। फिर तो सारा संसार ही हमारा घर बन जाता है और हम सभी के मित्र हो जाते हैं। निर्वैरता ही समता की जन्मदात्री तथा देवत्व की पहचान होती है। इसे योग की सिद्धि भी कह सकते हैं। यही हमें निश्चिन्त बनाती है। **निश्छल स्वभावी हर किसी का प्रिय होता है इसलिए वह प्रभु को भी अति प्यारा होता है। निर्मल चरित्र, चिंतन और व्यवहार मनुष्य को सदाचारी बनाता है। ऐसा मनुष्य ही वास्तव में महान होता है।** निष्ठुरता और निकृष्टता का त्याग हमें निजानंद का बोध कराता है। इस संसार में नीतिमान मनुष्य ही अपने नित्यानंद स्वरूप का अनुभव कर सकता है। यह तो गुणनिधान परमात्मा की दिव्य कृपा है। निमित्त भाव से की जाने वाली सेवा से आत्मा निष्पाप बनती है। कर्त्तव्यपालन में निपुणता प्राप्त करना ही ज्ञान का निचोड़ है। गीता में भी लिखा है, योग: कर्मषु कौशलम्।

सर्वोत्तम पुरुषार्थ है निर्दोष बनना

निस्पृह, निरासक्त और निष्ठावान मनुष्य तीनों लोकों में वंदनीय बनता है। आत्मा की निर्बलता एवं मन की निराशा को हटाने के लिए नित्य स्वाध्याय की आवश्यकता होती है। अच्छी सोच हमें नित्य नूतन बनाती है। आत्मा में बल, तेज, साहस एवं उमंग-उल्लास भरती है, प्रज्ञावान बनाती है। निर्दोष चैतन्य ही हमारा असली स्वरूप है। इसलिए निर्दोष (पावन) बनना ही सर्वोत्तम पुरुषार्थ कहलाता है। निर्दोष मनुष्य की गिनती देवताओं में की जाती है। निष्पाप बनना माना अपने पारलौकिक पिता का सच्चा-सच्चा वारिस बनना। ध्यान रहे कि परमपिता परमात्मा ने हमें अपनी असीम भक्ति का ही फल देकर ज्ञान और योग का अधिकारी तथा स्वयं का मालिक बनाया है।

योग से कर्मेन्द्रियाँ शीतल

निरंतर ईश्वरीय स्मृति से धीरे-धीरे मन खाली होने लगता है और

योगी निर्भार (लाइट स्वरूप) हो जाता है। उसकी जड़ता पूर्णत: खत्म हो जाती है और वह चैतन्यमूर्त ज्ञानप्रकाश स्वरूप बन जाता है। मन जब परमात्मा में ही स्थिर हो जाता है तब उसका भटकाव बंद हो जाता है अर्थात् मन निर्विषय हो जाता है। मन का निर्विषय होना ही निर्विकल्प समाधि है। परमात्म ध्यान के अभ्यास से जब मन पूर्णत: खाली हो जाता है तब ही परमात्मा का करंट प्रत्यक्ष अनुभव में आता है। फिर आत्मा में अलौकिक सुख, शान्ति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, पवित्रता और शक्ति का अनुभव होता है। जीवात्मा निर्भय, निरामय, शोकमुक्त और निश्चिन्त बनती है। **निरंजन का अनुभव पाने से अतिशय आनंद की प्राप्ति होती है। नियमपूर्वक योगाभ्यास से आत्मा में निर्मलता आती है। काम-क्रोधादि विकार शान्त हो जाते हैं। कर्मेन्द्रियाँ शीतल हो जाती हैं। मन शान्त, बुद्धि दिव्य, हृदय पवित्र तथा अंत:करण संतुष्ट हो जाता है। वचन मृदु और कर्म श्रेष्ठ बन जाते हैं। सद्‌गुणों की धारणा आपेही होने लगती है। यही आत्मा की सद्‌गति है।**

निमित्त भाव से कर्मबंधन समाप्त

निर्विकल्प समाधि का अनुभव उन्हीं को होता है जिनका संबंध केवल एक बाबा से ही होता है। इस संसार में निमित्त भाव से अपना कर्त्तव्य करते रहने से यथासमय हम कर्मबंधन से छूट जाते हैं; दिव्य, अलौकिक, अविनाशी एवं परमचेतन बन जाते हैं। परमविश्रांति को पा लेते हैं। हमारा मन निर्विकार हो जाने से आज तक की हुई हमारी साधना सफल हो जाती है। इसी स्थिति में टिकने से हम परमधाम निवासी बन जाते हैं। निराकार परमात्मा का अनुभव करने के लिए हमें विदेही स्थिति का अभ्यास करना होता है। बाह्य सांसारिक आकर्षणों से मुक्त हुआ निर्लोभी अथवा निर्मोही मनुष्य ही सच्चा तपस्वी बन सकता है। निष्काम सेवा करने वाला निष्पाप हो जाता है। ऐसे परोपकारी को ही आत्मा की सच्ची-सच्ची खुशी अनुभव होती है। ऐसा मनुष्य 'सदाशिव' बनने के कारण सदा प्रसन्न दिखाई देता है। निष्कलंक मानव ही सच्चा-सच्चा योगी है। वह सर्वत्र सम्मानित होता है। परमात्मा का प्रेम भी उसके लिए आरक्षित रहता है, ऐसा मनीषियों का कहना है।

अभ्यास से कुछ भी असंभव नहीं

सर्व सद्‌गुणों के भण्डार परमात्मा के प्रति निष्ठावान बनने से हम भी गुणवान बनते हैं और साधना में आगे बढ़ जाते हैं। नियमित अभ्यास तथा निरंतर प्रयत्न के द्वारा इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं। यहाँ तक कि परमपद भी। निन्दा-स्तुति में समत्व बनाये रखने वाला ही माया का समापन कर पाता है। दुविधा रहित आत्मा स्वराज्य अधिकारी बन जाती है। निरव्यर्थ विचार ही हमारे जीवनशिल्प को निखारते हैं। उसे सुन्दर बनाकर उसमें जान फूंकते हैं। महात्मा कबीर जी के शब्दों में,

पत्थर से पर्वत भरे
कोई ना पूजन जाय।
पत्थर से मूरत बने तो
जग का सिर झुक जाय।।

निराकार का नित्य ध्यान आत्मा की स्थिति को निर्लेप और निरुपम बनाता है, यह संपूर्ण सत्य है। नियोजित सत्ययुग में आने हेतु या संपूर्ण पवित्रता प्राप्त्यार्थ हमें दैवी गुणों की धारणा करनी होती है। नियम पालन करने से हम निरामय बनते हैं और जीवन में रूहानियत आती है। सर्वज्ञ परम चैतन्य का बोध और प्रत्यक्ष अनुभव हमें नित्यानंद स्वरूप बना देता है। ज्ञान का उजाला, हृदय को शिवाला तथा आत्मा को निराला बना देता है, यह ध्रुव सत्य है। जब सृष्टि निर्माता का निरपेक्ष प्रेम प्राप्त हो जाता है तब जीवन सफल हो जाता है और हम निश्चिन्त बन जाते हैं। परमात्म गुणों की प्राप्ति ही आत्मा की विश्रांति है। ❖

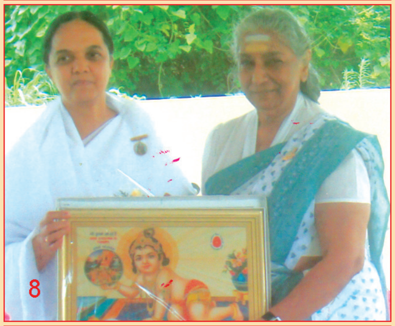

1.कालांवाली मण्डी- शिवशक्ति भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी। **2.पानीपत-** सुश्री ज्ञानेश्वरी जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरला बहन। **3.नंगल डैम-** संगतपुर गाँव में विधायक भ्राता राणा कंवरपाल सिंह को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पुष्पा बहन। **4.हरिपद-** आध्यात्मिक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए विधायक भ्राता वी.बाबू प्रसाद। मंचासीन हैं ब्र.कु. दिशा बहन तथा अन्य। **5.कानपुर (जरौली)-** विधायक भ्राता अजय कपूर को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दीपा बहन। **6.फिरोजाबाद-** जिला न्यायाधीश भ्राता अशोक अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. सरिता बहन। **7.एलुरू-** साधना कक्ष का उद्घाटन करते हुए जिला प्रधान न्यायाधीश भ्राता पी.रमेश बाबू, ब्र.कु. लावण्या बहन तथा अन्य। **8.बैंगलुरू (संगम तीर्थ)-** गायक भ्राता एस.जानकी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. वीणा बहन। **9.कड़पा-** आई.ए.एस. भ्राता एस.चेल्लप्पा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. ईश्वरी बहन। **10.मुम्बई (मालाड)-** आई.आई.टी.जे.ई.ई. परीक्षा में कुमार कन्दर्प के महाराष्ट्र में प्रथम तथा 13वीं आल इंडिया रैंक प्राप्त करने पर ब्र.कु. कुन्ती बहन सम्मान करते हुए। **11.हरदोई-** नगरपालिकाध्यक्षा बहन उमा गुप्ता को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. रोशनी बहन। **12.ऋषिकेश-** देवप्रयाग में नगराध्यक्ष भ्राता राम्प्रकाश पंडित को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. आरती बहन।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 atamprakash@bkivv.org